ISBN: 978-81-953083-4-7

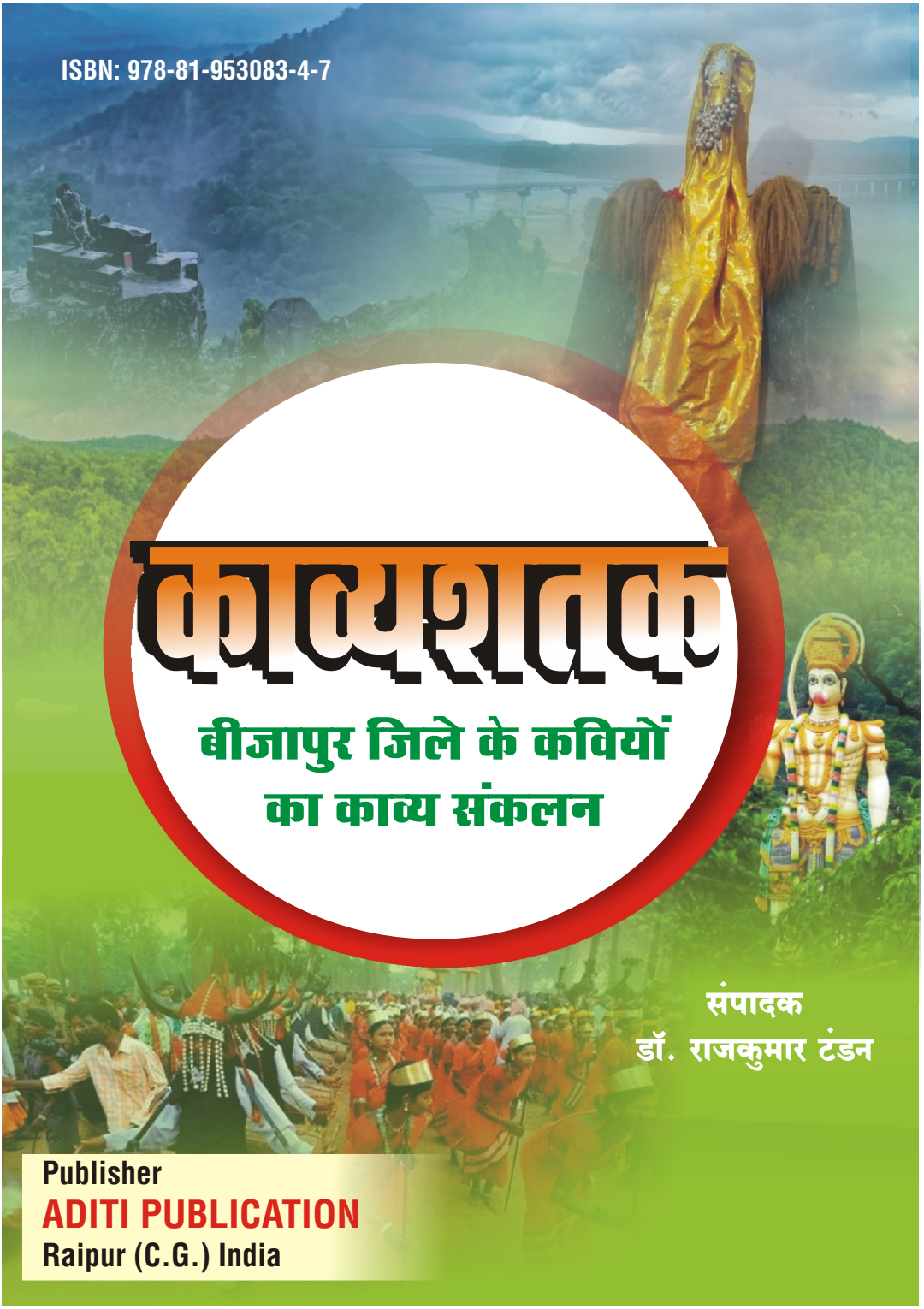

काव्यशतक

बीजापुर जिले के कवियों का काव्य संकलन

संपादक
डॉ. राजकुमार टंडन

Publisher
ADITI PUBLICATION
Raipur (C.G.) India

काव्यशतक

(बीजापुर जिले के कवियों का काव्य संकलन)

संपादक

डॉ. राजकुमार टंडन

बीजापुर, छत्तीसगढ़, भारत

Publisher

Aditi Publication, Raipur, Chhattisgarh, INDIA

काव्यशतक

(बीजापुर जिले के कवियों का काव्य संकलन)

2021
Edition - **01**
Date of Publication : 14/09/2021

संपादक
डॉ. राजकुमार टंडन
बीजापुर, छत्तीसगढ़, भारत

ISBN : **978-81-953083-4-7**

Copyright© All Rights Reserved
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of original publisher.

Price : Rs. **150/-**

Printed by
Yash Offest,
Lily Chowk, Purani Basti Raipur
Tahasil & District Raipur Chhattisgarh, India
Publisher :
Aditi Publication,
Near Ice factory, Opp Sakti Sound Service Gali, Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

दीपक बैज
सांसद -बस्तर
लोकसभा क्षेत्र क्रमांक - 10
बस्तर, छत्तीसगढ़

सत्यमेव जयते

निवास : ग्राम उसरीबेड़ा, पो. लोहण्डीगुड़ा
जिला : बस्तर, छत्तीसगढ़
मो.नं. : 8817277727, 9406077448
E:mail : deepakbaij77727@gmail.com

क्रमांक / 5687 / सांसद बस्तर

दिनांक–21 / 09 / 2021.

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है, बस्तर के इतिहास, भूमि–प्रकृति, कला, साहित्य, संस्कृति व विभिन्न परिदृश्यों को दृष्टिगत रखते हुए जिला बीजापुर, (छ.ग.) के कवियों का काव्य संकलन "काव्यशतक" पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें दूरस्थ तथा आदिवासी अंचलों के साहित्यकारों की रचनाओं का संग्रहण है। मुझे बहुत खुशी हुई।

मुझे आशा है कि, "काव्यशतक" पुस्तक का प्रकाशन रोचक एवं प्रेरक के साथ–साथ सभी के लिए पठनीय एवं अनुकरणीय साबित होगा।

मैं संपादक डॉ. राजकुमार टंडन जी को इस सराहनीय कार्य के लिये बधाई देता हूं तथा "काव्यशतक" पुस्तक अपने उद्देश्यों में सफल हो, इसके लिये मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं .....

आपका,

(दीपक बैज)

विक्रम शाह मण्डावी
विधायक, बीजापुर क्षेत्र क्र.–89
एवं उपाध्यक्ष, बस्तर क्षेत्र आदिवासी
विकास प्राधिकरण

निवास : नगर+पोस्ट–भैरमगढ़, तह.–भैरमगढ़
कार्या. पता : विधायक कार्यालय, बीजापुर
मोबाईल : 09424111105, 06260937050
फोन : 07853–220488
फैक्स : 07853–220490
ई-मेल : vikrammandavimla89@gmail.com

क्रमांक : .....

बीजापुर, दिनांक : .....

– :: संदेश :: –

छत्तीसगढ़ प्रदेश के दक्षिण–पश्चिम में अवस्थित बीजापुर जिला नैसर्गिक सौंदर्य एवं वनांचल से परिपूर्ण है। जिसमें श्रीयुत डॉ. राजकुमार टण्डन एवं उनके सहयोगी कवियों द्वारा "काव्यशतक" की रचना कर साहित्य जगत् में उत्कृष्ठ कार्य किया है। जिला बीजापुर के भौगोलिक एवं वर्तमान के विषम परिस्थितियों में की गई रचनाएं सामाजिक, सांस्कृतिक एवं अन्य दार्शनिक स्थलों का वर्णन बहुत ही अच्छा है। बड़े हर्ष का विषय है कि जिले के रचनाकारों ने "काव्यशतक" की रचना कर देश–दुनिया को परिचित कराने के उद्देश्य से **"काव्यशतक"** नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा है कि यह पुस्तक स्थानीय कवियों का बेहतर संकलन साबित होगा।

"काव्यशतक" पुस्तक के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

(विक्रम शाह मण्डावी)

डॉ. अनिल कुमार भतपहरी
सचिव
छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग

छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग
शहीद स्मारक परिसर
रायपुर (छ.ग.)
फोन नं.– 0771–2222123
मो.नं.– 9617777514

जावक कमांक PR

रायपुर दिनांक 20/09/21

//मंगल संदेश//

मोला ये जान के बड़ निक लगिस कि हमर राज के सुदुर जिला बीजापुर में बड़ गुन्निक साहित्यकार मन रहिथे । जोन मन अपन चिंतन–मनन, सिरजन से उहां के लोगन के मया–दया के संगे–संग उकर जीवन संघर्ष ल बरनन करत हे। ए हर बहुतेच बढ़िया बात आय।

छोट भाई डॉ. राजकुमार टंडन जी हर उन 4 कवियत्री अउ 14 गुनवंता कवि मन ल सकेल के उकर प्रतिनिधि 100 ठन कविता मन ल संघरा छापे के जोन उदिम करत हे ओहर बड़ सेहरौनिक बुता ये।

मोला खास परतिंगा हवे कि निश्चल मन बुद्धि अउ कर्म से जोन भी कारज करे जाथे उन मन सत –प्रतिशत सफल होवय। किताब हर अपन उद्देश्य म सफल होय। आघु चलके अउ सुघ्घर–सुघ्घर रचना छपय हमर मंगलकामना अउ असीस हवय।

(डॉ. अनिल कुमार भतपहरी)
सचिव
छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग

रितेश कुमार अग्रवाल
भा.प्र.से.
कलेक्टर

अ.शा. पत्र क्रमांक.....दिनांक.....
कार्यालय कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी बीजापुर (छ.ग.)
दूरभाष कार्या : (07853) 220022
निवास : (07853) 220398
फैक्स : (07853) 220019
ईमेल : bijapur.cg@nic.in

संदेश

बीजापुर जिले के कवियों का काव्य संकलन " काव्य शतक " का प्रकाशन होने जा रहा है। यह बीजापुर जिले के लिए गौरव एवं हर्ष का विषय है, जिसमें स्थानीय कवियों की विचारों एवं भावनाओं की उत्कृष्टतम् साहित्यिक अभिव्यक्ति होगी। उम्मीद है कि यह बीजापुर सहित बस्तर की समृद्ध साहित्यिक यात्रा के लिए प्रेरणादायी साबित होगी। इस काव्य संकलन से जुड़े संपादक डॉ. राजकुमार टण्डन और समस्त कवियों – कवियत्रियों को काव्य संकलन " काव्य शतक " के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं ।

(रितेश कुमार अग्रवाल)

पदमश्री धर्मपाल सेनी
अध्यक्ष
(अवार्डेड बाई दी प्रेसीडेन्ट ऑफ इण्डिया)

श्रीमती करुणा साह
सचिव

माता रुक्मिणी सेवा संस्थान

विनोबा ग्राम डिमरापाल, व्हाया जगदलपुर
जिला बस्तर (छत्तीसगढ़) 494 001, फोन : 889864860

पत्र क्र M.R.S.S/01 दिनांक : 19/09/2021

आशीर्वचन

——00——

बीजापुर जिले के कवियों का काव्य संकलन " काव्य शतक " नाम से प्रकाशित हो रहा है। यह कवियों की पहचान और उनके अरमान के लिए नया तथा महत्वपूर्ण अवसर है, जिसमें बीजापुर और बस्तर के साथ जीवन के विविध रंग होंगे। कल्पनाओं की उड़ान और भावों की अभिव्यक्ति होगी। ....साहित्य की यह यात्रा अपना आकर्षण उन्नत करते , प्रेरणा का प्रभावी श्रोत बनते बंधुत्व को स्थापित करने वाली हो। इसी शुभकामना के साथ सम्पादक डॉ. राजकुमार टंडन एवं समस्त कवियों को आशीर्वाद सहित —

धर्मपाल सेनी

धर्मपाल सेनी
माता रूक्मिणी सेवा संस्थान
विनोबा ग्राम डिमरापाल
जिला — बस्तर (छ0ग0)
मो. नं. 9479208234

अनुज शर्मा
PADMA SHREE AWARDEE

0771-4243900
+91-8223939000
www.anujsharma.in
anujs10001@gmail.com

प.क्र. 53/A.S./2021 रायपुर, 20 .09 .2021

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि बीजापुर जिले के कवियों का काव्य संकलन **"काव्यशतक" पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है |** जिसके संपादक डॉ. राजकुमार टंडन जी ने सुदूर अंचल के साहित्यकारों की रचनाओं को संग्रहीत करने का उल्लेखनीय कार्य किया है |

यह पुस्तक भविष्य में लोकप्रियता के साथ प्रतिष्ठा प्राप्त करे, मेरी यही कामना है | यह सफल प्रयास इस बात की ओर संकेत करता है कि छत्तीसगढ़ की समृद्ध साहित्यिक परम्परा का भविष्य सुरक्षित हाथों में है |

पुस्तक के प्रकाशन पर कवियों और संपादक को अपनी ओर से बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ |

(अनुज शर्मा)

DEHUTI, Bungalow No2, Magneto Signature Homes, Phase02, Raipur(C.G.)-492006

कविता की नयी आहटः बीजापुर जिले का काव्यशतक

लक्ष्मीनारायण पयोधि

बीजापुर जिला अपनी विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण अनूठा है। छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण–पश्चिम छोर पर अवस्थित इस जिले की सीमाएँ गोदावरी और इन्द्रावती नदियों के तट–रेखाओं के जरिये आन्ध्र प्रदेश,महाराष्ट्र और तेलंगना राज्य की सीमाओं का स्पर्श करती हैं।यही कारण है कि बीजापुर जिले के निवासियों की जीवनशैली, सांस्कृतिक परंपराओं, भाषा–बोली, पहनावा और खान–पान आदि में इन तीनों राज्यों की झलक देखी जा सकती है। यहाँ की शिल्प–कलाएँ और गीत–संगीत भी इन राज्यों के प्रभाव से अछूते नहीं हैं। इन्हीं इन्द्रधनुषी रंग–प्रभावों के बीच बीजापुर जिले के 18 सृजनधर्मियों का **''काव्यशतक''** सहेजकर प्रस्तुत हुए हैं,डॉ. राजकुमार टंडन।

इस अवसर पर मुझे स्मरण आ रहा है वह प्रसंग,जब 1979 में महाविद्यालयीन शिक्षा पूरी कर पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित अपनी थोड़ी काव्य–संपदा लेकर रायपुर से अपने गाँव भोपालपटनम् लौटा था। परवान चढ़ चुकी साहित्यिक अभिरुचि और पहचान के उत्साह में अपने मित्रों–मरहूम मकसूद अहमद 'मयकश', स्व. के.सदाशिव, स्व. जी. गोपाल 'गोपी' आदि के साथ मैंने 'पल्लव साहित्य समिति' गठित कर साहित्यिक गतिविधियाँ आरंभ की थी। इसी समिति के

माध्यम से वर्ष 1986 में बस्तर के सुप्रसिद्ध कवि स्व. श्री लाला जगदलपुरी के संपादन में चार कवियों का साझा काव्य संकलन 'हमसफर' प्रकाशित हुआ,जिसका भोपालपटनम् में ही लोकार्पण बीजापुर के तत्कालीन अनुविभागीय अधिकारी प्रख्यात हल्बी कवि स्व. सोनसिंह पुजारीजी द्वारा किया गया था। वह एक ऐतिहासिक अवसर था, क्योंकि संभवतः तब तक बीजापुर क्षेत्र में ऐसा कोई साहित्यिक अनुष्ठान नहीं हुआ था। मुझे प्रसन्नता है कि बीजापुर जिले के गठन के पश्चात् युवा कवि डॉ. राजकुमार टंडन एकबार पुनरू वैसा ही अवसर जुटा सके हैं।

विगत कुछ वर्षों से बीजापुर जिले में साहित्यिक चेतना का जैसा विस्तार हुआ है, वह अत्यंत सुखद है। कुछ रचनाकारों ने सृजन की ताकत से राष्ट्रीय परिदृश्य में अपनी रचनाओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। यह किसी भी क्षेत्र के लिये गौरव का कारण होना ही चाहिए। **''काव्यशत''** में सहभागी ये युवा कवि भी उन्हीं संभावनाओं की मशाल लेकर निकल पड़े हैं।मैं उनकी काव्याभिरुचि,ऊर्जा और उत्साह की सराहना के साथ उनका स्वागत करता हूँ।

डॉ. राजकुमार टंडन के संपादन में प्रकाशित होने वाले इस संग्रह में चौदह कवियों और चार कवयित्रियों की कुल सौ कविताएँ संकलित हैं। शायद, इसीलिये इस संग्रह का नाम **''काव्यशतक''** रखा गया है। इसमें डॉ. राजकुमार टंडन, डॉ. अजय कुमार वर्मा, सर्वश्री अमितेश तिवारी, महेश कोपा, नागेश मोरला, राज गुरला, सुनील लंबाड़ी, छेदीलाल

टंडन, दिलीप उसेंडी, कु. बी.रीना, श्रीमती ओमेश्वरी देवांगन 'नूतन' और सुश्री शशिकिरण महंत 'सोना' की श्रीमती गायत्री ठाकुर की, श्री बीरा राजबाबू 'प्रखर' और श्री अतुलेश तिवारी की 6–6, श्री पुरुषोत्तम चंद्राकर (गुरुजी) की 4 तथा श्री राजीव रंजन मिश्रा 'दुश्मन' और श्री प्रशांत यादव की 3–3 कविताएँ शामिल की गयी हैं।

''काव्यशतक'' के सभी रचनाकार अकूत संभावनाओं से परिपूर्ण हैं। यह साझा काव्य संकलन इन युवा सर्जकों की काव्ययात्रा का प्रस्थान बिन्दु है। इन कविताओं को पढ़कर यह उम्मीद की जा सकती है कि ये रचनाकार सृजन–संकल्प के साथ यदि अध्ययन और अभ्यास की निरंतरता बनाये रखें तो एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा,जब इनकी काव्य–संपदा न केवल बीजापुर जिले की बल्कि राष्ट्र की धरोहर बन सकेगी।

शुभकामनाएँ!.....

Dr. Dishwar Nath Khute
Assistant Professor
School of Studies in History
Pt. Ravishankar Shukla University,
Raipur (C.G.) 492010

Residence:-
Vikas Vihar Colony,Mahadevghat Road,
Behind Vidya Bhavan,Raipura
Raipur (C.G.) 492013, Mob.- 09424284824
Email- dnkhute@gmail.com

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रशन्नता हुई है कि मेरे छोटे भाई डॉ. राजकुमार टंडन के द्वारा छत्तीसगढ़ के अंतिम छोर पर बसे बीजापुर जिला के अठारह कवियों का काव्य संकलन **'काव्यशतक'** का संपादन कर रहे हैं जो अत्यंत ही सराहनीय कार्य है। इससे बीजापुर जिला के भाषा एवं साहित्य को संरक्षण व संवर्धन मिलेगा एवं ऐतिहासिक जानकारियों का लाभ शोधार्थियों तथा जिज्ञासु लोगों को प्राप्त होगा।

पुस्तक 'काव्यशतक' के संपादन एवं संकलित काव्य के कवियों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

21/9/2021

Assistant Professor
School of Studies in History
Pt. R. S. S. University
RAIPUR-492010 (C. G.)

Dr. Nister Kujur
Associate Professor
School of Studies in Sociology
Pt. Ravishanskr Shukla University,
Raipur, Chhattisgarh-492010 India.
Email Id. nister.kujur@yahoo.com
Mo.No. 8982463227

Q. No. B-1 (Old), Teacher Quarter,
University Campus, Pt. Ravishanskr Shukla
University, Raipur, Chhattisgarh-492010 India.

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत खुसी हुई है कि डॉ. राजकुमार टंडन जी, छत्तीसगढ़ के जनजातीय संस्कृति गढ़ बस्तर–बीजापुर जिला के अठारह कवियों का काव्य संग्रह – "काव्यशतक" का संपादन कर रहे हैं यह अत्यंत ही प्रशंसनीय कार्य है। इससे शोधार्थियों एवं पाठकों को बस्तर के जनजातीय जल, जंगल, जमीन से जुड़ी भाषा, संस्कृति, साहित्य एवं सामाजिक जनजीवन को समझने में मदद मिलेगा।

मैं डॉ. राजकुमार टंडन के इस चिंतन और प्रयास के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

21.09.2021
(Dr. Nister Kujur)
Associate Professor
School of Studies in Sociology,
Pt. Ravishankar Shukla University
RAIPUR (C.G.)-492010

B.R. NARWARIA
Retd. Principal
Awarded
From Governor of Chhattisgarh Government, Raipur
BSC. M.A. (ENGLISH, HINDI, ECONOMICS, SOCIOLGY
PUBLIC ADMINISTRATION ,HISTORY, POLITICAL SCIENCE)
BED., M.PHILL(Philosophy)

ADDRESS
REST HOUSE **ROAD BIJAPUR ,**
DIST - BIJAPUR
MOBILE – 9424293110, 9399975405
MAIL – babooramnarwariya@gmail.co

शुभाशीष

इस सुदूर वनाचल जिला बीजापुर छतीसगढ की भूमि पर श्रीयुत डॉ. राजकुमार टंडन एवं उनके सहयोगी कविगणो द्वारा काव्यशतक की रचना की है यह साहित्य जगत की एक मिशाल हैं इसकी प्रसंशा जितनी अधिक की जाये वह कम है चूँकि यह असुविधा भोगी क्षेत्र होने के बावजूद कविगणों द्वारा बीजापुर क्षेत्र भोगौलिक एवं वर्तमान परिस्तिथियो पर की गई रचनाएँ सामाजिक , सांस्कृतिक एवं धार्मिक वर्णन मर्मस्पर्शी है मै इन समस्त रचनाकारो एव डॉ. राजकुमार टडन को अपनी ओर से साहित्य जगत में अलख जगाई है साह्रदय शुभकामनाये देता हूँ यह भविष्य में , इस क्षेत्र के लिए एक अनुकरणीय प्रयास प्रेरणा दायक जो आने वाली पीढी को मार्गप्रशस्त करेगा। यह सृजनात्मक साहित्य सफलता अविस्मरणीय रहेगा।

शुभकामनाओं सहित .

बी ओ नरवरिया
से.नि. प्राचार्य
बीजापुर

संपादक की

से.....

विभिन्न भाषा और संस्कृतियों की पावन मिलन स्थली बीजापुर की पवित्र भूमि जहाँ भगवान चिकटराज, भैरमदेव व कोदई माता, माँ भद्रकाली, सकलनारायण आदि देवी–देवताओं के निवास स्थान है जो प्रकृति के गोद में बसा है जहाँ पामेड़ अभ्यारण्य और इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान में जहाँ अनेक जीव–जंतु स्वच्छंद रूप से विचरते हैं यहाँ ही पावन सरिता इंद्रावती नदी, मिनगाचल, तालपेरू आदि नदियाँ बहती है तो उसूर की पहाड़ी जिससे बहने वाली जल धाराएँ जिससे सुंदर जलप्रपात नम्बी, नीलम सराई, लंकापल्ली किसी के भी मन को मोहित कर सकते हैं। यहाँ की भोली–भाली सुंदर बालाएँ अपने नृत्य से धरा को गुंजित करते हैं तो मेहनत के लिए सदैव तत्पर पुरुषों की छवि मन मोह लेने की लिये पर्याप्त है यहाँ के राज घराने परिवारों में कुटरू से मंडावी (शाह) परिवार तो भोपालपट्नम का पामभोई अपने समय की साक्षी आज भी प्राचीन खँडहर पड़े महलों को देख सकतें हैं।

बीजापुर जिले के नामकरण के दो आधार प्रचलित हैंः प्रथम–बीजापुर का नामकरण "बीजा" नामक (गायता) आदिवासी जो गाँव का मुख्य पुजारी था जिनके नाम पर उक्त स्थान का नामकरण किया गया है तो दूसरे प्राकृतिक आधार के अनुसार "बीजा" नामक पेड़ के अधिकता के

कारण माना जाता है

अब बात करतें है भाषा और साहित्य की भाषा शब्द संस्कृत के भाष् धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाए भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं और अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। मनुष्य अपने विचार, भावनाओं एवं अनुभूतियों को भाषा के माध्यम से ही व्यक्त करता है।

यहाँ जानना भी आवश्यक है कि भाषा की जननी संस्कृति ही है जहाँ की जैसे संस्कृति होगी वहाँ की भाषा भी वैसे ही होगी, बस्तर आँचल में रिश्ते बोधक 'दादी' का अर्थ : अच्छे बुजुर्ग को कहते हैं जबकि मैदानी छत्तीसगढ़ में पिता के माँ को कहते हैं।

'मामा' को यहाँ ससुर जबकि अन्य स्थान में माँ का भाई ही है यह भले ही ओड़िसा का प्रभाव है।

'लाई' जो चाँवल से निर्मित किया जाता है और धान से मुर्रा जबकि यहाँ दोनों के लिए "लाई" ही उपयोग किया जाता है।

ठीक ऐसे ही 'नार' शब्द यहाँ गाँव का बोधक है तो मैदानी छत्तीसगढ़ में लता के लिए प्रयुक्त होता है।

कहने का मतलब यह है कि संस्कृति से ही भाषा की सृष्टि होती है फिर जाकर भाषा की समृधि के अनुसार साहित्य का प्रादुर्भाव हो पाता है जो समाज के दशा को दिखाते हुए दिशा बतलाने का प्रयास करना है आसान

शब्दों में कहें तो साहित्य समाज का एक आईना है जिसमें हम समाज को देखते है अर्थात् यह मानवीय जीवन का चित्र होता है किसी भाषा के वाचिक और लिखित को साहित्य कह सकते हैं। दुनिया में सबसे पुराना वाचिक साहित्य हमें आदिवासी भाषाओं में मिलता है। इस दृष्टि से आदिवासी साहित्य सभी साहित्य का मूल स्रोत है छत्तीसगढ़ के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र बीजापुर के 4 कवियत्रियों व 14 कवियों जिनकी कुल संख्या 18 हैं जो महाभारत की विजय गाथा कहती है, उम्र के पड़ाव को पार करके नागरिक बन कुछ अच्छा करने की चाहत लेकर निकल पड़े हों, छत्तीसगढ़ नामकरण के आधार 36 में से आधा गढ़ हों (छत्तीसगढ़ में 36गढ़ है जिसको आधा करने पर 18 हो जातें हैं उसी प्रकार उक्त संकलन में 18 कवि हैं) 100 अर्थात् शतक इस तरह से नामकरण हुआ"काव्यशतक"।

बीजापुर जिले के कवियों का काव्य संकलन "काव्यशतक" संपादित करना किसी चुनौती से कम नहीं था परंतु संकलित सभी कवियों के प्रेम का यह फल है कि यह कठिन कार्य सहज जान पड़ा है इसमें सभी कवियों के आर्थिक सहयोग के बिना पुस्तक रूप में छपा पाना संभव ही नहीं था पहले पहल भाई बीरा राजबाबू "प्रखर" जी के माध्यम से एक व्हाट्सएप ग्रुप में जुड़ें धीरे–धीरे एक से भले दो करते–करते आज हम लोग 29 साहित्य प्रेमी ग्रुप में जुड़ें हैं प्रखर जी के माध्यम से एक सप्ताह एक शीर्षक में कविताएँ लिखते थें उस पर कोई विशेष टिप्पणी भी नहीं

सिर्फ कुछ लिखने की आजादी थी धीरे से सभी में कुछ–कुछ सुधार होना शुरू हो गया और यहीं से शुरू हुआ "काव्यशतक" प्रकाशित करने की आधारशिला फिर भी अनेक दोषों से भरी यह पुस्तक मात्र संकलन है "कच्ची पर सच्ची" रचनाएँ हैं भावों को लिखने का प्रयास कियें हैं जिस प्रकार माता–पिता बच्चों की तोतली जुबान को समझ लेते हैं उसी प्रकार आप सभी सुधिपाठकों, विद्वानों व साहित्य प्रेमी माता दृपिता के समान ही हैं। छंदों के माया जाल से भी मुक्त हो पाना संभव नहीं है हाँ ये अलग बात है की मुक्तक छंद में रचनायें थोड़ी सी देखने को मिलेंगीं, महाप्राण निराला जी लिखते हैं "मनुष्य की मुक्ति के समान ही कविता की मुक्ति आवश्यक है" इसका यह मतलब नहीं की कविता छंद से मुक्त है उनके द्वारा मुक्तक छंद प्रयोग किया जाना भी एक छंद का ही एक प्रकार है जिसमें लय, ताल, यति, गति आदि रहेंगें ही इस काव्य संकलन में भी कुछ ऐसा ही है "काव्यशतक" को संकलन करने का जो दुस्साहस मैंने किया है उसके लिए मैं पाठकों से क्षमा माँगता हूँ और सुझाव रूपी छड़ी से मार कर सुधार करने की गुजारिश करता हूँ।

काव्य में संकलित पहले कवि श्री अमितेश तिवारी जी को पंत जी कहा करता हूँ कारण प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन जी जब काव्य लिखते थे तो सहज ही भावों की अभिव्यक्ति हो जाती थीं जो शब्दों को बहुत ही सुंदर रूप से पिरोते थे ठीक उन्हीं के समान अमितेश भाई भी शब्दों को बहुत ही सुंदर रूप से पिरोते हैं जिसको

पढकर भावों को सहज ही समझ सकतें है जैसे उक्त पंक्ति में देख सकतें हैं:

माँ मेरी अभिव्यक्ति के हित ज्ञान के भंडार दे दो
कर सकूँ मैं व्यक्त खुद को भावों को आकार दे दो....

दूसरें कवि श्री बीरा राजबाबू "प्रखर"जी की कविता तो तात्कालिक परिस्थितियों को काव्य के केंद बिन्दु में रख कर ही कविता लिखते हैं जो उनकी भविष्य के प्रति चिंता को दर्शाता है:

—काश! कहीं ऐसा होता ।
हर व्यक्ति अपने देश में साक्षर होता।
ये घूसखोरी, घोटाला, ये लूटमार न होता।
देश हमारा विकसित होता। काश!.....

तीसरे कवि श्री पुरुषोत्तम चंद्राकर (गुरूजी) की रचना बीजापुर को समर्पित जान पड़ती है उनकी कविता मनवा बीजापुर बीजापुर को बिम्ब का निर्माण कर काव्य की महत्वपूर्ण मापदंड को पूरी करता है जो उनकी निम्न काव्य में देख सकतें हैं:

मोहरि ढोल की थापे, मिलाते धुन से अपने सुर
नम्बी की ये जलधारा, बजाती है जहाँ नुपूर
ये है मनवा बीजापुर, है अपना बीजापुर

चौथे कवियत्री श्रीमती गायत्री ठाकुर "प्रज्ञा" जी की कविता मुख्यतः व्यंग्य प्रधान है जो सुदामा पांडे "धूमिल" की याद दिलाती है उक्त पंक्ति देखे:

व्यवस्था एक गीला आटा ।

भारत एक पराठा।

जिसका सारा कोना,समझ के बाहर है।

भ्रष्ट नेताओं से भरी,

यह सरकार है।

कागजों में योजनाएँ, तो कहानियों में विकास है।

खाने के लिए है सांसद, तो पचाने के लिए इतिहास है।

पाँचवे कवि के रूप में मैं स्वयं भी कुछ लिखने का प्रयास किया हूँ मेरी कवितायेँ "गीत–शैली" में लिखी गयी हैं क्योंकि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी लिखें है "नाद सौन्दर्य से कविता की आयु बढती है" मेरी कविताओं की भी मुख्य स्वर जागृति के साथ–साथ मानवीय पीड़ाओं को भी अभिव्यक्त करती है जैसे कविता "चित्र की व्यथा" में हमारें उन सभी महापुरुषों को ही व्यथा जिनको हम अपने लिए इस्तेमाल करते हैं तो 'विस्थापन का दर्द" भी सलवा जुडूम के समय बासागुडा से आकर बीजापुर में बसे श्री समैया जुमार जी का ही दर्द है तो कविता "समपर्ण"में एक भारत माता के लिए आह्वान है :

चतुर्वेदी की पंक्तियाँ, मुझे स्मरण आज है

तरुण बदलते है चित्र, करते नूतन साज है

वसुंधरा के गोद में पैदा, अब भी कुछ पिशाच है

सिंह के राहों को, लोमड़ी रोके आज है

उखाड़ फेंकों गद्दारों को, करदो नव निर्माण

छठे कवि श्री राजीव रंजन मिश्रा "दुश्मन" जी उपनाम नामकरण भी रोचक है वे अपने ही घर में काव्य लेखन की केंद्र के साथ ही निवास करते हैं उनकी लगभग कविताएँ उनकी धर्मपत्नी के ऊपर लिखते हैं जो एक अलग प्रयोग के भविष्य में याद की जायेगी "तमन्ना" शीर्षक ही देखें:

पहले मरना तुम
पीछे से मैं आऊंगा ।
रखना खाट लगा कर तुम
नहीं करूँगा तंग तुझे
मैं आते ही सो जाऊँगा ।

सातवें कवि श्री अजय कुमार वर्मा जी जीवन में अपने लक्ष्य के प्रति सफलता और असफलता को अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त करते है लिखते हैं:

सफलता और असफलता की बात छोड़ कर
सीखने के लिए तैयार रहते हैं
जिंदगी ऐसे लोग ही जीते हैं

आठवें कवि श्री महेश कोपा जी व नौवें कवि श्री सुनील लम्बाडी जी ये दोनों कवि युवा हैं इनकी कविताओं में नए युग का संदेश है भारत के अच्छे नींव के निर्माण का संकेत है कोपा जी लिखतें हैं:

कविता "सैनिक की चिट्ठी" में
आज नहीं तो कल आऊँगा,
चिट्ठी में मैं लिखता हूँ।।

वतन पे मर मिटने की,
बात यही मैं करता हूँ,
वापस घर लौटने की,
बात पत्र में लिखता हूँ।।

सुनील जी लिखतें हैंः

चलो न आज पढ़ने जाते हैं,
कुछ पढ़कर कुछ समझ आते हैं।
गढ़तें है विकास सब शिक्षा पाकर,
चलो न आज कुछ सीख आते हैं।

दसवें कवि श्री नागेश मोरला जी हैं उनकी रचनाएँ शिक्षा प्रदान करती हैं जैसेः

मैं भी इंसान हूँ, कोई मशीन नहीं।
मेरी पीड़ा भी तो समझो, मैं मानव प्राण हीन नहीं।।
कम उम्र में माँ बनकर, अनचाहा गर्भ धारण कर।
ताउम्र जीना पड़ता है औरत को, जिन्दगी मर मर कर।।

ग्यारहवें कवि श्री राज गुरला जी गजल लिखते हैं जो सीधे दिल की में ऊतर जातें हैंः

आज फिर मैं अपना कलम चला रहा हूँ,
मुझ पर जो गुजरी वो सितम लिख रहा हूँ।
कभी टूट गया कभी तोड़ा गया दिल को मेरे,
उस टूटे दिल पर यादों की मरहम लिख रहा हूँ।
अब ना कोई किनारा है और ना कोई साहिल,
मेरे साथ जो बीता वो मुश्किल लिख रहा हूँ।

बारहवें कवि श्री छेदीलाल टंडन जी हैं की कविता हम सबके लिये उदाहरण है जिसमें शब्द विधान व भाव विधान साथ–साथ चलते हैं वे कवियों की शैली को रेखांकित करती कविता "कवियों का कार्यशैली" में लिखतें हैंः

कवियों की कोई जाति नहीं,
कोई धर्म नहीं, कोई भेद नहीं।
कवि तो सिर्फ कवि ही है,
इनके मन में कोई छेद नहीं।।
स्वतंत्र विचारक होते हैं,
जो मन की बातें लिखते हैं।
कुछ काल्पनिक भी होती है,
कुछ हकीकत में भी दिखते हैं।।

तेरहवें कवि श्री दिलीप उसेंडी जी अपने कविताओं में उर्दू शब्दों का अधिक प्रयोग करतें हैं तथा भावों को भी कहते हुए समझा जाते हैं, देखे उनकी ये पंक्तिः

खता भी पहली, सजा भी पहली
तुम हाथों में सुहाग की मेहँदी लिखते रहें
यूँ ढूंढ– ढूंढ कर जोड़े थे,यादों के मोती
सुबह को तुम्हें शामों को शराब लिखते रहें
दोस्त करते रहे गजलों की नुमाईश
और हम तुम्हें लिखते रहें।।

चौदहवीं कवियत्री सुश्री बी.रीना जी की कविताएँ नारी शिक्षा–दीक्षा को दर्शाती हुई देखी जा सकती है जो उनकी निम्न कविताओ के शीर्षक –माँ, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, नशा नाश है, दहेज का त्याग अंत में उनकी "तलाश" नामक कविता में अंदर की छटपटाहट देख सकतें हैं:

मुट्ठी कभी खाली न थी। फिर भी तलाश जारी थी।
अंधे का बोध न थी।
ठोकरों को ठुकराना जारी थी
उड़ान मेरी सहज न थी। जूनुन मेरी जारी थी।

पंद्रहवीं कवियत्री श्रीमती ओमेश्वरी देवांगन जी की कविताएँ वर्तमान समय को चोट करतीं हैं उनकी कविता मंगतू राम छप्पर से टपकती बूंदें, पानी नहीं। आँसू है,एक किसान की।

ओर दूध भी है, वही बूंदे मंगतू के बेटे के, नसीब की। तो "मिट्टी" कविता अगेय जी की "कलगी बजरें की" की याद दिलाती है:

मिट्टी में आकर,बैठ जाती हूँ, मैं कभी–कभी।
क्योंकि मुझे अच्छी लगती है मेरी औकात कभी–कभी।।

सोलहवें कवियत्री श्रीमती शशिकिरण महंत जी की कविताओं को पढने से आप स्वतः जान जायेंगें की कोई आधुनिक मीरा के समान अपने प्रेमी की वियोग में तड़प रहीं हों परंतु अंदर की पीड़ा को किसी के समक्ष व्यक्त होने नहीं दे रही है:

हाँ ये सच है कि उसे भुलाना नहीं चाहती
वो याद है मुझे अब भी उसे जताना नहीं चाहती
गर खुश है मुझे भुलाकर अपनी जिंदगी में वो
तो मै भी उसकी जिंदगी में वापस जाना नहीं चाहती

सत्रहवें कवि श्री अतुलेश तिवारी जी की कवितायों में लिखते हैं जिसमें संस्कृतनिष्ट शब्दों का प्रयोग उनके पांडित्य का प्रमाण है वे आज के व्यस्त जीवन में मित्रों के लिए समय नहीं निकाल पाना उन्हें सिर्फ फेसबुक में ही देखते, पढ़तें हैं एक शब्दों में कहें तो काव्य को संदेश भेजने का माध्यम बनातें हैं जैसे निम्न पंक्ति में देख सकतें हैं:

पुरानें दोस्तों की तस्वीर, आज कहने लगे मुझसे
फेशबुक वाल से निकल कर, कभी तो रूबरू मिलो मुझसे

अंत में अठारहवें कवि श्री प्रशांत यादव जी की कविता आधुनिक समय को देखकर बदलाव तलाशती थी जो 21वीं सदी के लिए आह्वान करती हुए कहती है कि:

जागो मेरे वीर सपूतों मैं तुम्हें जगाने आई हूँ,
मैं भारत माता आज फिर द्वार तुम्हारे आई हूँ।
भ्रष्ट नेताओं की भ्रष्ट नीति ने मजबूर मुझको कर डाला,
इसीलिए आतंकवाद ने जंजीरों में जकड़ डाला।
तुम्हें दूध का कर्ज चुकाने अवसर देने आए हूँ।
मैं भारत माता आज फिर द्वार तुम्हारे आई हूँ।

इस तरह से कुल बीजापुर जिले के अठारह कवियों

का काव्य संकलन "काव्यशतक" प्रकाशित किया जा रहा है संपादक के रूप में यह मेरा प्रथम प्रयास है मैं यह भलीभांति जानता हूँ कि अनेक दोषों से युक्त हूँ यह काव्य संकलन मात्र है, जो बीजापुर जिले में रहकर काव्य लिखने का प्रयास कर रहें हैं।

अंत में पुनः क्षमा याचना करते हुए सभी पाठकों से मार्गदर्शन की आशा में.....

आपका अपना

डॉ. राजकुमार टंडन

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ.क्र.
I	**श्री अमितेश तिवारी**	01
01	माँ मेरी अभिव्यक्ति	02
02	हमें सिखाओ शिष्टाचार	03
03	दूर गगन	04
04	बेटी	05
05	बेटियाँ	06
06	संगिनी	07
II	**श्री बीरा राजबाबू 'प्रखर'**	08
07	गाँव और शहर	09
08	किसान	10
09	अशिक्षा से आजादी	11
10	काश!कहीं ऐसा होता	12
11	मोहब्बत की चाय	13
12	दहेज एक अभिशाप	14
III	**श्री पुरूषोत्तम चन्द्रकार (गुरूजी)**	15
13	मुक्तक	16
14	आदमी का नजरिया	17
15	व्यवस्था	18
16	मनवा बीजापुर	19
IV	**श्रीमती गायत्री ठाकुर**	20
17	शिव वाक्य	21
18	गणेश वाक्य	22

19	आज का युवा	24
20	पिता	25
21	भ्रष्टाचार	27
22	मेरी कविता	28
V	**डॉ. राजकुमार टंडन**	29
23	चित्र की व्यथा	31
24	भूल	32
25	राम	33
26	मेरा बीजापुर	34
27	विस्थापन का दर्द	35
28	समर्पण	36
VI	**श्री राजीव रंजन मिश्रा "दुश्मन"**	37
29	नामकरण	38
30	तमन्ना	40
31	संगिनी रुठों तुम मुझसे	42
VII	**श्री अजय कुमार वर्मा**	45
32	जिंदगी के नाम	46
33	जीने के तरीके	47
34	मेहनत और सफलता	48
35	रुकिये मत	49
36	माँ और घर	50
37	शराब की सच्चाई	51

VIII	**श्री महेश कोपा**	52
38	किसान	53
39	सैनिक की चिट्ठी	54
40	भ्रष्टाचार	55
41	अजन्मी शिशु	56
42	पिताजी	57
43	माँ	59
IX	**श्री सुनील लम्बाड़ी**	60
44	जीवन	61
45	नशा	62
46	चलो न आज पढ़ने जाते हैं	63
47	किसान	65
48	मेरा गाँव	67
49	बस्तर तुम आना	67
X	**श्री नागेश मोरला**	70
50	प्रवासी मजदूर	71
51	जलवायु परिवर्तन	72
52	भ्रष्टाचार	73
53	बेटी	74
54	गर्भ समापन	75
55	दहेज रुपी दानव	76
XI	**श्री राज गुरला**	77
56	मेरा बस्तर महान देखो	78
57	मेरी किस्मत की बात देखो मुझे	79
58	क्या लिखूँ	80

59	नजरों से गिरकर	82
60	अधुरी ख्वाईश	83
61	बस्तर की शान इंद्रावती मेरी जान	84
XII	**श्री छेदी लाल टण्डन**	85
62	शिक्षक दिवस विशेषांक	86
63	छत्तीसगढ़ी महान	88
64	हमें डर लगता है	90
65	सौतन तेरी अजब कहानी	92
66	कवियों की कार्यशैली	94
67	मेरा बस्तर	96
XIII	**श्री दिलीप उसेंडी**	98
68	शहीद–ए–दर्द	99
69	तुम्हें लिखते रहें	100
70	हारी कहते हैं	102
71	साँझ और तुम	103
72	बस्तर देखोगे	104
73	जमाने किधर गये	107
XIV	**कु बी रीना**	108
74	माँ	109
75	अशिक्षा	110
76	भ्रष्टाचार	111
77	नशा नाश है	112
78	दहेज का त्याग	113
79	तलाश	115

XV	**श्रीमती ओमेश्वरी देवांगन "नूतन"**	116
80	मंगतू राम (किसानों की मौत पर)	117
81	नारी शक्ति	118
82	खुशियों की दुआ	119
83	आजकल	120
84	माँ का प्यार	121
85	मिट्टी	122
XVI	**श्रीमती शशि किरण महंत (सोना)**	124
86	समंदर की रानी	125
87	हाँ ये सच है कि उसे भुलाना नहीं चाहती	126
88	वह दर्द में है पर मैं रो न सकी	127
89	तेरे बिन रहना सकूँ	129
90	प्यार में खुद को बर्बाद होते देखा है	131
91	गुनहगार हूँ मैं उसकी	132
XVII	**श्री अतुलेश तिवारी**	133
92	आदमी की जात	134
93	मातृभूमि	135
94	लोकतंत्र	136
95	पिता	137
96	पानी	139
97	पुराने दोस्तों की याद	142
XVIII	**श्री प्रशांत यादव**	**144**
98	पुकार	145
99	21वीं सदी का आह्वान	146
100	तुम कविता....	147

कवि परिचय

नाम : **श्री अमितेश तिवारी**

पिता : स्व. आर एल तिवारी

माता : पूज्यनीय श्रीमती विद्यावती तिवारी

जन्म तिथि : 01.05.1984

शैक्षणिक योग्यतायें : PMHM

पता : बीजापुर वार्ड क्रमाँक 6 बीजापुर (छ.ग.)

माँ मेरी अभिव्यक्ति....

माँ मेरी अभिव्यक्ति के हित
ज्ञान के भंडार दे दो
कर सकूँ मैं व्यक्त खुद को
भावों को आकार दे दो....
तेरे हाथों की छुअन से
मूक वीणा भी है गुंजित
ठीक ऐसे ही मुझे भी
स्वरमयी उपहार दे दो....
भाव सुमनों में महक हो
दीप सी उनमें चमक हो
तृप्त कर दे जो मन को
वह सरस व्यवहार दे दो....
मोर सा पुलकित रहे मन
वेदों के वो अर्थ पाये
स्याह स्याही से उजाली
लौ कि बस करामत दे दो....
हट रहा कर्तव्य पथ से
हो रहा पुरूषार्थ कम है
मन की इन कमजोरियों में
माँ नया पुरुषार्थ दे दो...
माँ मनोहर की छवि पर
शीश अपना झुकाता हूँ
स्वार्थ को परमार्थ का
माँ अद्‌भुत वरदान दे दो...
अंकिचन की लाज रख कर
सार्थक जीवन बना दो
चेतना का बीज बो कर
स्नेह का जलपान दे दो!!!!

हमें सिखाओ शिष्टाचार

चुगते– चुगते दाना चुग गयी,
खलिहानों के ढेर।
और उड़ाऊ चिड़िया को तो,
भारत में कितना अंधेर।
इन्हें सिखाओ शिष्टाचार...

आपको माता ही कहता हूँ,
जिस मिट्टी में मैं रहता हूँ।
मेरी अपनी श्रद्धा भक्ति
दुनिया को लगती है रद्दी इन्हें.....

यहाँ–वहाँ से मारे चोंच
अन्न निकाल ले, ले ओट
पर हम हिन्द के पहरेदार
हुड़–हुड़ करे तो अत्याचार
इन्हें सिखाओ....

चिड़िया ले आयीं हथियार
ऊँच–नीच का किया प्रहार
खलिहानों का चक्कर छूटा
इक दूजे पर प्रहरी टूटा इन्हें.....

अब तो मौज मनाओं यार
चिड़ियों का पूरा संसार
हम तो जाहिल और गँवार
बचा सके न अपना परिवार!
हमें सिखाओ शिष्टाचार

दूर गगन

दूर गगन सूरज उगता है
बिना उष्णता बिंब खिंचता है
मन उस ओर तके लालच से
छू लेने को जी करता है...
सैर सुबह तन रखती ताजी
आलस जड़ता दूर भगाती
पर यह दृश्य करे मन चोरी
बड़ा मनोरम जो लगता है... दूर गगन...
सरस शीत समीर बहता है
अंबर बिल्कुल स्वच्छ साफ है
सारे अतिथि गये घर फीका
मन सब उलझन से रीता है.. दूर गगन...
आ अब बैठे संयत होकर
दुःख के सारे लम्हें खोकर
कहीं नहीं रजनी की कालिख
स्नेहिल शुभ्र प्रकाश मिलता है...दूर.. गगन..
पद्माकर के तट से सटकर
शिव मंदिर के इस प्रांगण पर
ज्योति फूल शिव के पूजन का
प्रथम यहीं पर ही उतरा है...दूर गगन...
मधुर– मधुर धुन चिड़ियाँ देतीं
कूद –फांद के नृत्य करे भी
धरती की फैली परात पर
शगुन न्यौछावर मन करता है..
दूर गगन सूरज उगता है
छू लेने को जी करता है!!

बेटी

मैं चेहरे से भी मुस्कुरा नहीं पाता
वो कदमों से खिलखिलाती है
मेरी बेटी पहन के पायल जब
घर में आती जाती हैं
द्वार पे पहुँचू वो पहले आहट पा लेती है
दौड़ पहले वो खुशी से गले लगा लेती है
बेटियाँ कदमों से भी खिलखिला लेती है
मैं उसके खेल को देखूँ
वो कैसे अभिनय बनाती है
जीवन के हरेक पहलू कौतुक ही सजाती है
कहीं बेटी कहीं बहना कहीं मम्मी, दादी बन जाती है
वो कदमों से ही खिलखिलाती है
माँ के श्रृंगार बड़े भाते है उसे
चूड़ी बिंदी लाली लगा लेती है
कभी कभी तो खुद पर साड़ी भी
आजमा लेती है
पानी, रोटी सब्जी दौड़ कर पहुँचा देती है
पापा कुछ और लेंगे
आवाज लगा देती है
बेटियाँ सारे रिश्ते निभा लेती है
वो तो कदमों से भी खिलखिला लेती है

बेटियाँ

पुण्य कलश का पूरित जल है
स्नेह भरा अनुपूरित कल है
बेटीयाँ खुद में इक उपवन सी
महके जो माली का बल है.. पुण्य...
मन गह्वर से स्नेह बहाती
माँ सी दिखलाती है झाँकी
भोलेपन की मुस्काहट में
बेटीयाँ खुशियों का संबल है.. पुण्य..
मंत्रों सी कंगन की खनखन
पायल के रुनझुन स्वर से
अपसारित करती हैं बेटीयाँ
भाग्य रेख के टंकण अनभल.. पुण्य..

संगिनी

नये संसार के निर्माण की
निष्पाप संगिनी हो तुम...
विधाता की दी हुई, अनमोल
बेशकीमती उपहार हो तुम
जिंदगी की राह पर अंत तक
चलने वाली साथी हो तुम....
किस तरह डरता रहा मैं
क्या दिशा जीवन की होगी
तब मिली ताकत निडरता
हौसला विश्वास हो तुम....
मैं कहाँ तितली पकड़ने
दौडता गिरता फिरा हूँ
पर मेरे हर ओर का
मिला अंतिम छोर हो तुम..
अब तलक मशरूम ही था
प्रेम अब फूटा है मुझमें
आचरण कर्तव्य निष्ठा
इन सभी से दिव्य हो तुम
यह सही कि मैं चलाता
अपने मन से हूँ तुम्हें
पर समंदर में पथिक की
नाव व पतवार हो तुम....
जिंदगी में दृष्टि के सब, दोष से मुझको बचाकर
नये संसार के निर्माण की, निष्पाप संगिनी हो तुम....

कवि परिचय

नाम : **श्री बीरा राजबाबू 'प्रखर'**

पिता : स्व. श्री बीरा नारायण

माता : श्रीमती बीरा शुभलक्ष्मी

जन्म तिथि : 02.01.1982

पद : पटवारी (राजस्व विभाग)

शैक्षणिक योग्यताएँ : स्नातकोत्तर (हिन्दी एवं अर्थशास्त्र)।

मो. नं. : 9399825641, 9424298778

प्रकाशित पुस्तकेः

1. आखिर कौन है जिम्मेदार (व्यंग्यात्मक काव्य संग्रह)
2. बीजापुर एक खोज (शोध परकपुस्तक)
3. राष्ट्रीय साझा संकलन काव्य कौशल एवं सृजन प्रवाह में रचनाएँ प्रकाशित ।

साहित्यिक उपलब्धियां/सम्मानः

आकाशवाणी जगदलपुर मे काव्यपाठ। कलम की सुगंध काव्यमंच हरियाणा से उत्कृष्ठ प्रस्तुति सम्मान। कला कौशल साहित्य संगम छ.ग. से साहित्य श्री अलंकरण 2020 से सम्मानित। श्री नर्मदा प्रकाशन से राष्ट्र गौरव साहित्य सम्मान 2021, विभिन्न मंचो पर काव्य प्रस्तुति एवं सम्मान प्राप्त।

पता : कीर्ति भवन वार्ड नंबर 02 डारापारा, बीजापुर, जिला. बीजापुर (छ.ग.) पिन नंबर. 494444

गाँव और शहर

गाँव छोड़कर शहर में कमाने चले थे,
कोरोना से मौत देख वापस आ गए।।

शहर शहर चिल्लाने वाले मर रहे हैं,
गाँव देहात के लोग जिन्दगी पा गए।।

गाँव की यादें लंगोटिया यार पीछे छूटे,
शहरी नकली व झूठे दिखावे भा गए।।

रूपया, गाड़ी,बंगला बहुत कमा लिया,
माँ की रोटी, पिता का प्यार गवां गए।।

हर साँस में धूल और धुआँ पीते रहे,
गाँव की हवा छोड़ मौत में समा गए।।

किसान

मिट्टी की सौंधी खुशबू से,सना हुआ किसान।
खेत जोत फसल उगाए,अन्नदाता भगवान।।

पुलकित होते धरा गगन,और खेत खलिहान।
बहा पसीना माटी सींचे, मनुष्य यह महान।।

बैल कुदाल फावड़ा हल, ये थोड़े सामान।
हैं ये साथी पक्के जिनसे जीत लिया जहान।।

ऋतु वर्षा की बाट जोहते, ताके आसमान।
ओले,कीट,बाढ़,सूखे से मिलता न निदान।।

उपज का असली दाम न देते आला हुक्मरां।
कर्जा बढ़े देख कृषक भी,देते अपनी जान।।

राजनीति का केंद्र बिन्दु अब बन रहा किसान।
बदले सत्ता पर न बदले, गरीब की पहचान।।

प्रगतिशील देश में जिसका रहता योगदान।
न भुलाना देशवासियों किसान का बलिदान।।

अशिक्षा से आजादी

तरक्की के ताले की चाबी चाहिए।
देश को शिक्षित आबादी चाहिए।।

गरीबी की बेड़ियाँ काटना है तो,
अशिक्षा से अब आजादी चाहिए।।

साक्षरता का अलख जगाए जो,
प्रजातंत्र में ऐसा खादी चाहिए।।

बच्चों को शिक्षित करते किस्से,
कहानियों वाली वो दादी चाहिए।।

कागज कलम से बदल दे हुकूमत,
किताबों का आदी चाहिए।।

माँ मॉम और पिताजी पा हो गए,
तालीम की न ऐसी बर्बादी चाहिए।।

काश! कहीं ऐसा होता

काश! कहीं ऐसा होता ।
हर व्यक्ति अपने देश में साक्षर होता।
ये घूसखोरी,घोटाला,ये लूटमार न होता।
देश हमारा विकसित होता। काश!.....
चारों तरफ अशांति न होती,ये अत्याचार न होता।
ये बेरोजगारी न होती, ये बेकारी न होता।।
देश हमारा किसी का कर्जदार न होता। काश!....
जनसंख्या में वृद्धि न होती।
राशन के दुकान पर लंबी लाइन न होती।
ये भेदभाव का जाल न होता।
हर कोई बेहाल न होता।
भारत का बंटवारा न होता। काश!.....
ये सीमाओं की लड़ाई न होती।
हिंसा की फिजाएं अगर आई न होती।
कई जवानों की पत्नियाँ बेवा न होती।
कई माताओं की कोख उजड़ी न होती।
चारों ओर अमन और शांति होती
खुशहाली के फूल इस चमन में भी खिलते
अशांति का माहौल न होता।
काश! हमारा देश 200 साल तक,
अंगेजों का गुलाम न होता।
तो देश हमारा आज,
विकास में यूं पिछड़ा न होता।।

मोहब्बत की चाय

वो एक छोटी सी मुलाकात थी,
जिसमें थोड़ी हँसी और
गुदगुदाती मस्ती कर ली ।
तुमसे मोहब्बत करने की,
हमने सरपरस्ति कर ली।
तुम आओगे इसलिये
मोहब्बत की चाय बनाई थी,
पर तुमने सोचा चाय में
नशा कम है इसलिए
शराब से दोस्ती कर ली।
चाय मेरी मुहब्बत ही थी,
इसलिए फेक नहीं पायी।
अपनी पूरी जिन्दगी को
नशे में डूबते देख नहीं पायी।
उस चाय को मैनें एक
और बार उबाल दी।
जिसमें तुम्हारी यादों को
चीनी अदरक से मिला दी।
पर तुम नशे में डूब रहे थे,
इसलिये मैनें वह चाय,
किसी और को पिला दी।।
अब मेरी चाय की गंजी,
बिल्कुल बेदाग और साफ है ।
जिसको मैनें वो चाय पिलाई थी,
आज मेरे दो बच्चों का वह बाप है ।।

दहेज एक अभिशाप

कन्या कोई वस्तु नहीं, जिसका मोल लिया जाता है।
विवाह में दूल्हे को, रुपयों से तौल दिया जाता है ।।

दहेज के लालच में ही विश्व में कई घटनाएं होती हैं ।
हाथों की मेंहदी सूखती नहीं, और हत्याएं होती हैं ।।

मांगी रकम न मिलने पर घोर यातनाएं दी जाती हैं ।
कभी पेट्रोल तो कभी गैस में, जिंदा जलाई जाती हैं।।

इस कुरीति ने कितनों को, मौत के घाट उतारा है।
दहेज रुपी दानव ही, गर्भ में बेटियों का हत्यारा है।।

दहेज लेना और देना दोनों ही कानूनन अपराध है ।
लोभियों की घृणित सोच का कुंठित अवसाद है।।

ब्याहता दुल्हन को ससुराल में बेटी सा अपनत्व दो।
परम्पराओं की तुलना में अब विवेक को महत्व दो।।

रोको इस परिपाटी को,बेटियों का सपना चूर न हो।
फिर कोई 'आयशा' आत्महत्या करने मजबूर न हो।।

कवि परिचय

नाम : **श्री पुरूषोत्तम चन्द्रकार (गुरूजी)**

पिता : स्व. श्री सी. एच. चन्द्रकार

माता : स्व. श्रीमती पुन्नाली चन्द्रकार

जन्म तिथि : 08.07.1981

शैक्षणिक योग्यतायें : स्नातकोत्तर (इतिहास)

प्रकाशित पुस्तके : सिसकियाँ (काव्य संकलन), दूरदर्शन विभिन्न मंचों में संचालन और काव्य पाठ।

मो. नं. : 9479158525, 7489426344

ईमेल : ompurshottam0807@gmail.com

पता : डीपो पारा, बीजापुर,
जिला–बीजापुर (छ.ग.) पिन नंबर– 494444

चार मुक्तक

01

किरण का हाथ थामे हम, तमस पर वार करते हैं
दिये जो गम कभी खुशियां, उन्हें आभार करते हैं
बहुत बोये दिलों में हम, नफरत के इन बीजों को
कि सभी शिकवे भुलाकर अब, चलो हम प्यार करते हैं

02

ये मिट्टी पूजते हैं हम, लहू का आचमन करके
हुए हैं वीरगत कितने हजारों अरि दमन करके
उन्होंने जिंदगी देकर हमें यह जिंदगी दी है
चलो दीपक जलायें आज, समाधि को नमन करके

03

इन यंत्रों के षडयंत्रो को, मंत्रो से खोलेंगे हम।
जोतकर हड्डी से खेतों को, बंदूके बो लेंगे हम
इस जन्नत में घुसकर तुम, कयामत हम पे ढाये हो
कि तुम्हारे हर कहर को अब, लहू में ही घोलेंगे हम

04

घरौंदा रेत का है पर, समंदर ना घुला पाया
सितम सहता रहा लेकिन, ना मैं उसको रुला पाया
हुए नाकाम हम दोनों, मोहब्बत के सफर में यूं
कि तुम दिल मे पनाह दी हो, ना मैं तुमको भुला पाया

आदमी का नजरिया

आत्मरक्षा के बहाने आदमी, हथियार बना रहा है
ये जीने की तमन्ना में, मौत का आधार बना रहा है।।

पहले आदमी ने हथियार की खोज की शिकार के लिये
अफसोस कि अब बनाता है नृशंस व्यवहार के लिए

आदमी के नजरिये में, यह कैसा परिवर्तन आ रहा है
न जाने क्यों इंसान आजकल , जानवर होता जा रहा है।

इंसान त्याग, प्रेम, मैत्री से बहुत दूर हो रहा है।
आदमी लोभ, ईर्ष्या, द्वेष को व्यर्थ में ढो रहा है।।

बैर, क्रोध, हिंसा को ये, अब कर्म समझने लगा है।
सत्य, श्रद्धा, अहिंसा को, ये अधर्म समझने लगा है।।

हाय! इंसान में यह कैसा परिवर्तन आ रहा है?
नफरत वाली सोच को, यह क्यों अपना रहा है!

व्यवस्था

सहाब आपके
हर कार्यक्रम में
शिरकत करेंगे।
हमें किसी
से कोई
शिकायत नही है
कि वृक्ष के
छाँव के नीचे
बैठें
या खड़े – खड़े
ही आपको देंखें
और सुनें।

पर उन मासूम
विधार्थियों का
क्या कसूर है
जो आज बिना
विद्यार्जन किये
घर चले गए।

मनवा बीजापुर

मोहरि ढोल की थापे, मिलाते धुन से अपने सुर
नम्बी की ये जलधारा, बजते है जहाँ नुपूर
ये है मनवा बीजापुर, है अपना बीजापुर

फिजाओं को मट्टीमरका,बहुत अनुपम सजाई है
निलमसराई, लँकापल्ली को कुदरत रचाई है
मिनगाचल की खुशबू से, फसलें लहलहाती हैं

हिरण, मछली की झुंडों को, तालपेरु खेलाती है
सकलनारायन, भद्राकाली, इंद्रावती है कोहिनूर
ये है मनवा बीजापुर, है अपना बीजापुर

बूढा देव, चिकटराज, आंगन में खेलाते हैं
कोदईमाता, तुलढोकरी,आँचल में झुलाते हैं
थामकर हाथ दूजे के, मंडई में गाते गीत मधुर

ये है मनवा बीजापुर, है अपना बीजापुर

कवि परिचय

नाम : **श्रीमती गायत्री ठाकुर**

पति : श्री प्रवेश सिंह

माता : श्रीमती यशोदा वर्मा

जन्म तिथि : 10.10.1988

योग्यता : स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास)

मो. नं. : 7987290449, 9406306304

ईमेल : gayatrithakur25@gmail.com

साहित्यिक उपलब्धियां/सम्मानः

सम्मान–आकाशवाणी जगदलपुर मे काव्यपाठ। वाह वाह क्या बात साहित्य मंच से काव्य प्रभा सम्मान।विभिन्न मंचो पर काव्य प्रस्तुति एवं सम्मान प्राप्त।

पता : लेखापाल, बी. आर. सी. बीजापुर, जिला– बीजापुर (छ.ग.), पिन नं.– 494444

शिव वाक्य

नवविवाहिता शिव मंदिर में,
करने लगी विलाप।
आशीर्वाद दिया होता,
क्यों दिया अभिशाप?
प्रलाप सुनकर कन्या के मुख से,
प्रकट हुए महेश्वर!
बोले.....३
हे पुत्री!
कष्ट तुझे क्या?
क्यों रोती है तू इतना?
कन्या बोली.....
शायद कमी मेरी भक्ति में रह गई थी।
पति दिया क्यों ऐसा,
जिसके नशे में दुनिया बह गई।
शिवजी हँसे और बोले.....
याद करो तुम सावन की छटा निराली।
भोग, धतूरा और बेलपत्र से....
सजी तुम्हारी थाली।
नशा चढ़ाया तुमने मुझ पर...
असर हुआ कुछ ऐसा।
अब रोती हो तुम क्यों इतना?
जब पति मिला मुझ जैसा.....

गणेश वाक्य

गणेश चतुर्थी के कुछ दिन बाद,
अनंत चतुर्दशी के कुछ दिन पहले गणेश जी स्वतः ही विसर्जित होने को निकले।
घबराए से मुरझाए से,
मुझे रास्ते में मिले।

मैंने पूछा.....
हे विघ्न विनाशक,
ऐसा क्या दुष्कृत्य आपके सीने में गड़ गया।
जो समय रहने से पहले ही,
आपको विसर्जन के लिए भागना पड़ गया।

गणेश जी बोले.....
बेटा तुम कुकृत्यों की बात करती हो,
यहाँ तो कुकृत्यों का भरमार है ।
श्रद्धा भक्ति कम,

बस व्यापार ही व्यापार है।
पूज्य स्थल पूजनीय ना होकर,
अजायबघर हो गया है।
और पूजा के लड्डू में भी,
देशी घी गायब हो गया है।

पूजा में व्यापार इस कदर रचा है।
की रोज सुनाई पड़ता है,
किसके घर का चंदा बचा है...
भक्तगण आरती का मंजर,

कुछ यों सजा देते हैं।
की आरती के बीच में ही,
कहो ना प्यार की बोली लगा देते हैं।

इसलिए मेरे भक्तों,
मैं इस पूजा से उब गया हूँ।
पानी में तो ना डूब सका,
मगर कर्जे में डूब गया हूँ.....

आज का युवा

कॉपी ना किताब, बस फ्री हैंड।
कॉलेज जाने का, बस यही है ट्रेंड
अब तो हर स्टूडेंट मांगता है, गाड़ी
गॉगल्स और गर्लफ्रेंड।
कॉलेज तो ऐ आते हैं।
भँवरो की तरह मंडराते हैं।
लेकर अपना मेटरियल, रेस्टोरेंट में घुस जाते हैं।
थोड़े गोल–गप्पे, थोड़े छोले, पेप्सी की बस बोतल खोले।
कॉलेज की बेल दबी नहीं, लेकर चल दिए अपने झोले।
कॉलेज में स्टाइल दिखलाते हैं।
शाहरुख सा स्माइल बतलाते हैं।
देख कर रूप रिजल्ट का, खुद को
गधों के लाइन में पाते हैं।
पैरवी पर पास की ख्वाहिश रखते हैं।
अपने फादर से फरमाइश करते हैं।
टीचर भी अब करें क्या, बस 8 को 28 करते हैं।
छोड़ के ये अपना छोर, चल दिए हैं
जाने किस ओर।
पेप्सी पीकर बोलते हैं
ये दिल मांगे मोर.....

पिता

जिन्होंने मुझे लिखना सिखाया है,
आज उन्ही के बारे में लिख रही हूँ।
मैं तो मात्र रेत का एक छोटा सा कण हूँ,
और आज सारा जहां लिख रही हूँ।
कैसे लिखूं पिता का क्या स्थान होता है?
हर बच्चे के लिए पिता पूरा आसमान होता है।
मेरे जन्म से पहले का इंतजार और मेरे जन्म के बाद उनका
प्यार आज भी उनकी यादों में विद्यमान है।
माँ ने तो मुझे जन्म दिया
पिता के नाम से मिली
मुझे पहचान है।
मुझे हमेशा से अपने सरनेम पर गुरुर होता है।
क्योंकि मेरे सरनेम पे पिता का साथ होता है।
मैं हूँ क्या? मेरी खूबियाँ हैं क्या? ये पापा ने मुझे बताया ।
जहाँ–जहाँ मैं लडख़ड़ाई।
सबसे पहले हाथ पापा का आगे आया।
मुझे आत्मनिर्भर बनाने के लिए पापा सबसे लड़ जाते थे।
मेरी गलतियों को छुपाकर खुद डाँट खा जाते थे।
जब भी किसी ने कहा कि....३

लड़की है कहाँ कर पाएगी.....
पापा ने कहा.....
मेरी बेटी है जरूर कर जाएगी,
है यह मेरी परछाईं,
मुझसे भी अच्छा करके बतलायेगी।
जैसा बाप वैसी बेटी वाली बात पर, पापा धीरे से मुस्कुरा जाते थे।
मेरे पापा ने मुझे,
परियों जैसा प्यार किया।
पर साथ में एक मजबूत लड़कियों जैसा संस्कार दिया।
मेरे पापा, मेरे मान है
मुझ पर गौरवान्वित होने वाले,
वो पहले इंसान हैं।

भ्रष्टाचार

व्यवस्था एक गीला आटा। भारत एक पराठा।
जिसका सारा कोना, समझ के बाहर है।
भ्रष्ट नेताओं से भरी, यह सरकार है।
कागजों में योजनाएँ, तो कहानियों में विकास है।
खाने के लिए है सांसद, तो पचाने के लिए इतिहास है।
भ्रष्टाचार से लिप्त, सरकारी दफ्तर हैं।
तो जुगाड़ में जुटा, आदमी लतफत है।
जेब में हो पैसा,
तो मिलता सम्मान है।
फिर वह धन काला हो या सफेद,
बस उस पर अपना ही अधिकार है।
सही का साथ और ईमानदारी का हाथ लिए,
आदमी बहुत लाचार हैं।
अब करें भी तो क्या..... आटा है
गीला और..... संविधान है लचीला।
सरकारी दफ्तर है।

मेरी कविता

दिन ढलने के बाद रात होती है,
तब मेरी कविता मेरे साथ होती है।
मैं होती हूँ और वो होती है,
तब जिंदगी की सारी बात होती है।
तब मेरी कविता मेरे साथ होती है।
ना आसमा में बादल,
ना बादल में बिजली, बस यादों के झरोखों में..
तब मेरी कविता मेरे साथ होती है।
तब मेरी कविता मेरे साथ होती है ।
गम नहीं जिंदगी ने कोई तोहफा न दिया।
मेरी कविता मेरी जिंदगी की
सबसे बड़ी सौगात होती है।
प्यार की बरसात होती है।

कवि परिचय

नाम : **डॉ.राजकुमार टंडन**

पिता : सतलोकी श्री सुकुल राम टंडन

माता : सतलोकी श्रीमती बहारतीन बाई टंडन
सतलोकी श्रीमती रेशम बाई टंडन

जन्म तिथि : 01.07.1981

पता : प्रवीन चन्द्र वार्ड नंबर 13, तहसील पारा बीजापुर (छग)

शैक्षणिक योग्यतायें : एम.ए.(हिंदी,भाषाविज्ञान) बी.एड,
टेट, डिप्लोमा इन इंग्लिश,
डिप्लोमा इन थिओलॉजी
सेट,नेट,एम.फिल.(गोल्ड मेडलिस्ट)
पी–एच.डी.(राजीव गाँधीस्कॉलरशीप, दिल्ली)

अन्य : फाउनडर मेंबर–की टू सक्सेस कोचिंग सेंटर, रायपुर
राष्ट्रीय स्तर के शोध पत्रिकाओ में अनेक शोध पत्र प्रकाशित
विभिन्न सेमिनार व कार्य शालाओ में सहभागिता
आकाशवाणी व कवि सम्मेलनों में सहभागिता

प्रकाशित पुस्तकेः 1. बिलासपुर संभाग के स्थान–नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन।

अप्रकाशित पुस्तकेः 1.मोर छत्तीस छत्तीसगढ़ी कबिता (काव्य संग्रह)
2. दोरला जाति का लोक साहित्य
3. छत्तीसगढ़ के सतनामी साहित्यकारः एक अध्ययन
4. प्रभु ईसा मसीह का जीवन व दर्शन
5. बाबा संत गुरु घासीदास का जीवन व दर्शन
6. भगवान राम का जीवन व दर्शन
7. मेरी नेपाल यात्रा (यात्रावृतांत)
8. उबड़ खाबड़ (आत्मकथा)
9. विचारो का मैदान (कहानी संग्रह)
10. व्यथा (काव्यसंग्रह)
11. बीजापुर जिले के स्थान–नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन।

संपादन : 1. काव्यशतक (बीजापुर जिले के कवियों का काव्य संकलन)
2. छत्तीस के आकड़ा।

सम्प्रति : व्याख्याता,
शासकीय उच्च.माध्य.विद्या. तोयनार
विकासखंड–बीजापुर, जिला–बीजापुर (छग)
जिला अध्यक्ष,
छत्तीसगढ़ी साहित्य समीति, बीजापुर।
जिला समन्वयक
छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग बीजापुर

चित्र की व्यथा

बारम्बार मुझसे पूछा उस कोने पर पड़ा चित्र,
ओ मेरे बेदारी मित्र।
आज प्रातः से शुद्ध हूँ पूर्ण परिशुद्ध हूँ,
क्या कोई समारोह है, या महत्वपूर्ण दिवस
शायद इसलिए स्मरण करने में हो विवश
पुष्पहार से लदा यही सोच रहा था
मन में कारण खोज रहा था
कैसा हुआ ये अनोखा ये विचित्र,

वर्ष भर पड़ा सना धूल में खुश था
कम से कम वहाँ तो मैं कुछ था
पर आज नहीं ठिकाना है
नींव को कौन पूछता है
अब तो कंगूरे का जमाना है
कौन स्मरण करता है अब हमारा चरित्र,

आज तो सर्वत्र देशभक्ति छाई है
हमारी स्मृति कैसे हरेक में समाई है
चलो झूठा सही कुछ देर के लिए सम्मान तो पाई है
हाँ संतुष्ट है कम से कम मतलब के काम तो आई है
चौदिशायों से आती आज सुगंधमय ईत्र।

भूल

मैंने तो की थी, एक जरा सी भूल
जिसने मिला दी मेरे कैरियर में धुल
बात है उन दिनों की, जब पढाई में था बिलकुल
मिली मुझसे एक हसीना, जो थी बड़ी चुलबुल
वो थी जैसे बागों में, खिला गुलाब का फूल

कल तक थी, कैरियर पर मेरी नजर
कुछ करने को कस ली थी अपनी कमर
कैरियर के जगह उनसे मिली मेरी नजर
चाहत पनपने लगी इस कदर

कॉलेज को मिस करके मिलते थे
कभी हॉटल तो कभी टॉकिज चलते थे
लोगों के नजर से आगे निकलते थे
इस तरह से दोनों तरफ प्यार पलते थे

आज सिर्फ मैं रह गया हूँ
पानी के समान बह गया हूँ
वो आज इंजीनियर के पीछे बैठी है
देखती है तो मुह ऐंठती है

राम

बड़ा कठिन है राह राम का, इक्के दुक्के ही चल पाते हैं
जो गर चले जाते हैं तो वो सीधे बैकुंठ जाते हैं
वचन स्वयं का नहीं, फिर भी वचन निभाते हैं
कंटक पथ पर भ्राता, भार्या संग नंगे पाव जाते हैं
इसलिए तो अंत में, सभा मंगल गान गाते हैं
अभिमानियों के मान मिटाकर, सीधे राह दिखाते हैं
ऐसे पुरषोत्तम श्री राम को, बच्चे बूढ़े सब भाते हैं
ऐसे पावन श्री राम के चरणों में, कोटिश शीश नवाते हैं
भारत वर्ष कें अस्मिता, पहचान बने उनको वंदन करते हैं
कल्पना नही जो साक्षात्, गोस्वामी चन्दन तिलक लगाते हैं

मेरा बीजापुर

मेरा बीजापुर है, ये है मेरा बीजापुर
यहाँ प्रेम है भरपूर, ये है मेरा बीजापुर

1. चार ब्लाक के साथ है सुन्दर उसूर
झरना पहाड़ियों के लिये है प्रसिद्ध आना जरुर

2. गाँव–गाँव में मिलते है देवी–देवताओं के मंदिर
ब्रम्हदेव यहाँ है कहते जिसको मिरतुर

3. खाने में पेज दलिया और तीखुर
बास्ता संग तरकारी खाना जरुर

4. भोपालपट्नम है प्राचीन नगरी
राजा की हवेली यहाँ साथ में कुटरू

5 तालपेरू और मिनगाचल नदियाँ है यहाँ
इंद्रावती, गोदावरी नदियों के भी है सुरूर

6. चिकटराज का राज बीजापुर
अभ्यारण्य, राष्ट्रीय उद्यान है गुरुर

7. कोदीईमाता भद्रकाली, सकलनारायण मेला
भैरमदेव भूपालदेव की नगरी है मशहूर

8. कुटरू का मस्जिद बीजापुर और गंगालूर का चर्च
पंचशील आश्रम गुमरगुंडा, सतगुरु बोरजे आना जरूर

9. द्वीप कोशलनार, बीरावट्टी है अद्भुत
तिमेड़ और मिनगाचल बांध है एन्चपल्ली हुजुर

विस्थापन का दर्द

शांति की ओर लौट रहा था, पर अशांत था मन
छूट रहे थे रिश्ते–नाते, गाँव और सारे संबंध

घर मेरे नौकर चाकर थे, बाबू मुझे बुलाते थे
पकवान मन चाहा सब, मुझको रोज खिलाते थे
क्या था? क्या हुआ? मेरा आज जीवन

अब पूछता हूँ क्या खाओगे, रसोइया नाम पाया है
तकदीर ने हाय मुझे, आज कहाँ लेके आया है
कटता अब मेरा समय, करता हुआ हवन

मेरे आँगन में चिड़ियाँ चहकती थीं, सुबह–सवेरे
खेत खलियानों में बितता था, मेरा शाम–सवेरे
हाड़ मांस सब सूख गये खोखला हुआ तन

दोस्तों की मण्डली सदा रहते मुझको घेरे
आज पड़ा हूँ मृत लाश सा नहीं कोई सवेरे
किस को बतलाऊँ मेरी ये तपन

समर्पण

तुम्हें स्वागत करता है मन, देश के नव दर्पण
न रहूँ मैं, न तुम रहो, करें सम्पूर्ण अर्पण।
चतुर्वेदी के पंक्तियाँ, मुझे स्मरण आज है
तरुण बदलते हैं चित्र, करते नूतन साज हैं
वसुंधरा के गोद में पैदा अब भी कुछ पिशाच हैं
सिंह के राहों को, लोमड़ी रोके आज है
उखाड़ फेको गद्दरों को, करदो नवनिर्माण
विद्यार्थियों के शक्ति को, सारे राष्ट्र ने माना हैं
क्योंकि क्रांति रक्त का अब, आ गया जमाना है
पर्वत क्या है, समंदर ने दिया तुम्हें ठिकाना है
सत्य पथ पर बढते हुए, बढते रहते जाना है
देश अभी मझधार में अटकी, उस पार पहुँचाना है
हिलोर आते बारंबार, तुम्हे माँझी बन जाना है
न स्वेक्षा प्रबल हो तुम में, ऐसा हो समर्पण
प्रज्ञा वृक्ष फलता पर, सदा झुकना पड़ता है
अग्रज होने के लिए, अनुज बनना पड़ता है
शैने–शैने समय की आभा में, उसको तपना पड़ता है
सुनना, समझना फिर पूँछना, इसमें तुम्हें गढ़ना हैं
कांकचेष्टा बकों ध्यानं, श्वान निंद्रा, अल्पहारी गृहत्यागी
इन पंचरत्नों को कर लो तुम धारण

कवि परिचय

नाम	:	**श्री राजीव रंजन मिश्रा "दुश्मन"**
पिता	:	श्री राम विलास मिश्रा
माता	:	स्व. श्रीमती वीणा रानी मिश्रा
जन्म तिथि	:	03.03.1975
शैक्षणिक योग्यतायें	:	एम.बी.ए.
मो. नं.	:	9407668586, 700728024
ईमेल	:	mishramishrarajiv@gmail.com
अनुभव / कार्यरत्	:	16 वर्षों से जिला कार्यक्रम प्रबंधक के पद पर।
अभिरूचि	:	कहानी व कविता लेखन, सूत्रधार नाटकों में अभिनय एवं निर्देशन (विकास के मंत्र)
पता	:	हास्पिटल कालोनी, बीजापुर (छ.ग.)

नामकरण

अरे ये क्या नादानी है
दुश्मन बनने की ठानी है
सुंदर सा कुछ नाम तुम रखते
यह सब तो बचकानी है ।
भूल गई तुम
ये तेरी ही कहानी है
जो सदियों पुरानी है
याद करो उस पल को
जब मैंने रचना सीखा था ।
तेरे स्वपनो में ही जीता था।
करो स्मरण उस पल को तुम
जब मैने ईजहार किया
अश्रुपूर्ण नयनों के संग
तुमने मुझे अस्वीकार किया।
रोते रोते मेरे कंधो पर
अपना सर आड़ दिया
तेरे अधर हिले इक ध्वनि हुई
मेरे कानों में चली गई
तेरे ही वो शब्द थे
क्यों दुश्मन जैसा
प्यार किया
मान लिया मैं बात को तेरी
नहीं कोई प्रतिकार किया

स्वयं को दे दुश्मन नाम
स्वयं का मैं श्रंगार किया।
एक सत्य मैं
आज हूँ कहता
मैंने बस एतबार किया
सब रस्मों को निभा–निभा कर
दुश्मन बन कर प्यार किया ।।

तमन्ना

पहले मरना तुम
पीछे से मैं आऊँगा।
रखना खाट लगा कर तुम
नहीं करूँगा तंग तुझे
मैं आते ही सो जाऊँगा।
पहले मरना तुम
पीछे से मैं आऊँगा।।
सुबह सुबह उठते ही तुम
शक्कर वाली चाय पिलाना
भूतों को नहीं होता शुगर
ऐसा कह कर तुझे हंसाऊगा।
पहले मरना तुम
पीछे से मैं आऊंगा।।
जा ऊपर पहचान बढ़ाना
सब पितरों को बहलाना
होली के रंग भी होंगे
दीवाली की खुशहाली भी
नीचे जो न कर पाया मैं
ऊपर ही कर जाऊँगा।
पहले मरना तुम
पीछे से मैं आऊँगा।।
क्यों जाऊँ मैं तेरे बिन
रास्ते में डर जाऊँगी

किसकी छाती से लग कर
मैं अपना डर भगाऊँगी
न आगे न पीछे कोई
साथ चलेगें हम दोनों
मैं ईश्वर को समझाऊँगी।।
ईश्वर न आते हैं लेने
आते हैं यमराज
एक नहीं सुनते हैं किसी की
करते अपना काज।।
ये भोली नादान दीवानी
ऊपर में तू रहे सुरक्षित
तेरी बची रहेगी लाज
नीचे तो हर पल लुटती है
नारी की ही लाज।।
ठीक कहा तुमने है मुझसे
मैनें मान ली तेरी बात
पहले ऊपर मैं जाऊँगी
तुम आना उसके बाद।।

संगिनी रुठों तुम मुझसे

संगिनी रुठो तुम मुझसे
जब तक तुम रूठोगी नहीं
मैं किसको मनाऊँगा
किसके पीछे भाग भाग कर
अपना वक्त बिताऊँगा
संगिनी रुठो तुम मुझसे
मैं अब तुझे मनाऊँगा।।
यौवन अपना बीत गया
बच्चों के लालन पालन में
प्रौढ़ काल में अब मैं
प्रेम प्रसंग बनाऊँगा
संगिनी रुठो तुम मुझसे
अब मैं तुझे मनाऊँगा।।
पूर्ण चाँद की बेला में
उद्यान तुझे ले जाऊँगा
गुलाब नहीं गुड़हल ही सही
कुंतल में तेरे लगाऊँगा
संगिनी रुठो तुम मुझसे
संगिनी रुठो तुम मुझसे
मैं अब तुझे मनाऊँगा।।

कर्म भूमि सी उस रसोई में
मैं पकवान बनाऊँगा
लाख मना करने पर भी
मैं उसमें आ ही जाऊँगा
डिब्बों को मै ठीक करूँगा
कुकर को हाथ लगाऊंगा
फ्रिज से जो मांगोगी तुम
मैं सरपट जा कर लाऊँगा
संगिनी रुठो तुम मुझसे
मैं अब तुझे मनाऊँगा।।
बीत गया वो वक्त सजन जी
मैं अब रूठ न पाऊँगी
बहु बेटे के बीच खड़ी मै
दूर से ही शरमाऊँगी
अब जीवन ऐसे ही चलेगा
पर्दे में ही प्यार पलेगा
बज जाये चूड़ी जब मेरी
समझो मैं रूठी हूँ
पायल जब बज जाये
समझो तुम एकांत
पल्लू जो ले लूं मैं सर पर

समझो बड़ों का आना
जो मैं भागूं कर्मभूमि में
समझो बच्चों को
कुछ खाना है
अब न होऊँगी मैं अकेली
न होगे तुम
परिवार के बीच में रह कर
बने रहो हमदम
तुम बने रहो हमदम।।

कवि परिचय

नाम : **श्री अजय कुमार वर्मा**

जन्म तिथि : 15.07.1988

शैक्षणिक योग्यतायें : MTech IIT Roorkee
(विशेषः जीवन में अपने लक्ष्य के प्रति सफलता और असफलता को अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त करना।)

मो. नं. : 7974462185

ईमेल : ak.verma8819@gmail.com

पता : प्रवीन चन्द्र वार्ड नंबर 13, तहसील पारा बीजापुर (छग)

जिंदगी के नाम

मिले तो मिट्टी
न मिले तो सोना
आधे को कद्र है
और आधे को रोना
ये कैसा हो गया है जमाना
खुल कर इसे जी न पाना
खुद में खो जाना
बेपरवाह हो जाना
जमाने से दूर होकर
जिंदगी के पास हो जाना
ये किसी को न जताना
और न ही बताना की
ये जिंदगी है दोस्त
इसे बस जीते ही जाना।

जीने के तरीके

जिसके पास दाव लगाने को बहुत कुछ हो
मगर हारने को डर नहीं
जिंदगी ऐसे लोग ही जीते हैं

सफलता और असफलता की बात छोड़ कर
सीखने के लिए तैयार रहते हैं
जिंदगी ऐसे लोग ही जीते हैं

किसी को खोने या पाने का डर न हो
जो खुद के साथ ईमानदारी से चलते हैं
जिंदगी ऐसे लोग ही जीते हैं

अच्छी और बुरी दोनों बातो से फर्क न पड़े
खुद के स्वाभिमान के साथ चलते हैं
जिंदगी ऐसे लोगो ही जीते हैं

मेहनत और सफलता

सफलता और असफलता के इस मैदान में
न जाने लोग क्या से क्या बन जाते है
मगर सफलता से दूर हो
असफल हो कर भी
लाखों में अपनी पहचान
कुछ लोग ही कर पाते हैं
इन्हीं असफल लोगों से
मैं कुछ कहना चाहता हुँ
वो सफलता ही क्या
जो तुम्हारे मंजिल आ न सकी
वो असफलता ही सही थी
जो तुम्हें तुम्हारी मंजिल से भटका न सकी
अब ये बड़ी सफलता
कुछ इस तरीके से पेश आएगी
जो लाखों में नहीं
करोड़ो में पहचान बनाएगी
तब मालूम होगा
दुनिया वालो को
ईश्वर ने सफलता शायद उन्ही
लोगों के लिए बनाई है
जो सफलता और असफलता के मैदान में
असफल हो कर भी लाखों में अपनी पहचान बनाई है।

रुकिये मत

पढ़ाई ज्यादा नहीं कुछ समय ही कर पाओ
रुकिये मत

दौड़ न पाओ तो चलते ही रहिये
रुकिये मत

कुछ ज्यादा नही थोड़ा ही कर पाओ
रुकिये मत

समय के आगे नहीं पीछे ही चल पाओ
रुकिये मत

जिम्मेदारी ज्यादा नहीं मगर थोड़ा ही उठाओ
रुकिये मत

सपने पूरे करने हो तो मेहनत करते रहें
रुकिये मत

भविष्य में न सही वर्तमान में रहो
मगर रुकिये मत

माँ और घर

अभी–अभी तो माँ, घर में आंधी का
कचरा उठाया करती थी।
बंदरों से मचा उत्पात का,
खपरों का टुकड़ा उठाया करती थी।
दिनभर धूल से सने बर्तनों को,
पानी भर–भर कर साफ किया करती थी।
खाना बनाते समय, धूल से बचाने
के लिए छाता सिर पर लगाया करती थी।
जैसे ही बारिश हुआ करती थी
बिस्तर इधर से उधर जमाया करती थी।
बारिश खतम होने के बाद,
पूरे घर को पोछा लगाया करती थी।
सिगड़ी में खाना बनाते समय मेरी माँ,
खूब खाँसा करती थी।
धूल से नहा कर मेरी माँ,
उमर से अपनी ज्यादा दिखा करती थी ।
सब को संजोए रखने के खातिर मेरी माँ,
कभी खुद के तकलीफों को बयाँ ना करती थी।
हमें अच्छे हालात में रखकर मेरी माँ,
ना जाने किस हालात में रहा करती थी।

शराब की सच्चाई

शराब पीकर दोस्तों की महफ़िल में,
हर रात निकल जाती है ।
राज कितने भी दबा कर रखो सीने में,
हर बात निकल जाती है ।।
यूँ तो छुपाना चाहता है,
हर कोई अपने शख्सियत को ।
मगर पीने के बाद, लोगों के
चेहरे से नक़ाब निकल जाती है ।।
यह शराब नहीं मेरे दोस्त, एक हक़ीक़त है ।
इसे पीने के बाद लोगों की औक़ात
निकल आती है।।

कवि परिचय

नाम : **श्री महेश कोपा**

पिता : श्री कोपा नागैय्या

माता : श्रीमती कोपा समक्का

जन्म तिथि : 24.03.1989

शैक्षणिक योग्यतायें : बी. एस. सी.

मो. नं. : 9406083259, 9399642511

ईमेल : maheshkopa24@gmail.com

प्रकाशित रचनाएँ/कृति :

आधृत पब्लिकेशन हाउस भोपाल म.प्र. में कविता प्रकाशित एवं डरोप्लेट ऑफ इंक पूरी ओडिसा में रचनाएं प्रकाशित।

प्राप्त सम्मान : डरोप्लेट ऑफ इंक पब्लिकेशन पूरी ओडिसा द्वारा प्रशस्ती पत्र से सम्मानित।

पता : शहीद भगतसिंह वार्ड क्रमांक– 13 (बाजारपारा) जिला–बीजापुर (छ.ग.)

किसान

बिन तेरे न अहमियत जग की,
क्योंकि अन्न ऊगाता है तू।
अन्नदाता है तू,
जग को खिलाता विधाता है तू।
हरियाली है तू, खेतों की शान है तू,
बंजर सी भूमि की कीमत है तू।
अन्नदाता है तू ,
जग को खिलाता विधाता है तू।
निष्फल को फल देता बनाता है तू,
ऐसा निःस्वार्थ हलवाहा है तू।
अन्नदाता है तू ,
जग को खिलाता विधाता है तू।
न भूख की चिंता, न पैसों की आश,
संसार को प्राण दे, ऐसा प्राणी है तू।
अन्नदाता है तू ,
जग को खिलाता विधाता है तू।
कहने को एक किसान है तू,
चुकाये न चूके एहसान है तू।
अन्नदाता है तू ,
जग को खिलाता विधाता है तू।
पसीना पानी सा बहाता है तू,
मानो तो विश्व की हरियाली है तू।
अन्नदाता है तू ,
जग को खिलाता विधाता है तू।

सैनिक की चिट्ठी

आज नहीं तो कल आऊँगा,
चिट्ठी में मैं लिखता हूँ।।
वतन पे मर मिटने की,
बात यही मैं करता हूँ,
वापस घर लौटने की,
बात पत्र में लिखता हूँ।।
सीना ताने डटे रहूँगा,
सीमा पर मैं कहता हूँ।
दुश्मन को खदेड़ आऊँगा,
बात पत्र में लिखता हूँ।
रोज सुबह माँ की तस्वीर को,
अपने माथे से लगाता हूँ।
घर आकर चिकित्सालय जाने की,
बात पत्र में लिखता हूँ।
चिंता ना कर मेरी माता,
वापस एक दिन आऊँगा।
स्वयं ना आ पाया तो,
साथी छोड़ जाएंगे।
देश की सेवा में मैं अपने,
प्राण न्यौछावर कर दूंगा।
चलकर न आया द्वारे तो,
लिफट तिरंगे आऊँगा।
आज नहीं तो कल आऊंगा,
चिट्ठी में मैं लिखता हूँ।।

भ्रष्टाचार

गरीब और गरीब हो रहा है,
देश में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।
देश नहीं मिटने देंगे,
कहने वाले भ्रष्टचार में अव्वल हैं।
सबको पता है करतूत कर्म की,
देश का भविष्य नहीं है उज्ज्वल।
बोतल, कपड़े खूब बाँट रहें है,
नेता खुलकर भ्रष्टचार कर रहें है।
मौन यहाँ सभी पड़ें हैं,
हिस्से सबके बंटे पड़े हैं।
रिश्वतखोरी के लालच में,
हमने अपनों को न छोड़ा।
नोटो की तस्करी में,
देश को कहीं का नही छोड़ा।
गरीब और गरीब हो रहा हैं,
देश मे भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।

अजन्मी शिशु

सज रही थी गर्भ में मैं, चलने को संसार में।
स्वप्न में देखा था, अनजाने संसार को।
जान मेरी चली गई, देख ना पायी संसार को।

जानकर तो किसी ने, अनजाने में जान ले लिया।
नन्ही सी थी जान मेरी, क्या कसूर थी मेरी।
सजा मुझे किस बात की मिली, रहम किसी ने किया नहीं।
इतना भेदभाव क्यों मुझसे, आने जग में दिया नहीं।
सज रही थी गर्भ मे मैं, चलने को संसार मे.....

माँ मैं तेरे गर्भ में रहकर, कई ख्वाब देखा करती थी।
मैं भी पढ़ती–लिखती, गगनस्पर्शी नाम मैं करती।
बोझ मुझे समझते हैं सब, मैं कुछ कर दिखलाती।
सज रही थी गर्भ मे मैं, चलने को संसार में.....

गर्भपात कर गुनाह कर रहे, फिर भी सब अनजान बन रहे।
गिरी हुई मंशा लोगों की, मुझे जन्मने नही दे रहे।
बेटी जिस दिन न हो जग में, प्रलय धरा में निश्चित।
सज रही थी गर्भ मे मैं, चलने को संसार मे.....

पिताजी

पिता हैं तो आनंद हैं,
पिता माँ की बिंदी है।
पिता निलय की दीपक हैं,
खुशियों का सबब हैं।
पिता का ही अंश हूँ,
चिंता मैं उनकी पढ़ता हूँ।
पिता बिन बेअंग हूँ,
पिता हैं तो जग में हूँ।
पिता मेरे जीवन के,
ना भुलाये नाता हैं।।
पिता कभी तीखें हैं,
कभी मधुर लगते हैं।
बाहर से रोष पर,
भीतर से कोमल हैं।
पिता मेरे जीवन के,
ना भुलाये नाता हैं।।
चरणों में उनके बैकुंठ है,
करुणा के सागर हैं।
उनसे पृथक न हो कोई,

परमात्मा से ऐसी अभिलाषा है।

पिता मेरे जीवन के,
न भुलाये नाता हैं।।
अंगुली पकड़के उन्होंने,
चलना हमें सिखाया है।
जीवन की हर डगर पे,
लड़ना हमें सिखाया है।
पिता मेरे जीवन के,
न भुलाये नाता हैं।।

माँ

स्वर्ग सी आँचल ख्याल आती है,
बचपन की डाँट याद आती है,
बचपन ही ठहर जाता क्यों सयाने हुए।।
उसकी हर बात में स्नेह याद आती है।
माँ नाम लूँ तो नींद अच्छी आती है।
माँ न हो तो जग में।
पल–पल माँ की याद रूलाती है।
माँ की ममता की मोल नहीं,
उनका मोल–भाव करे,
नर इस योग्य नहीं।
माँ नाम लूँ तो नींद अच्छी आती है।।
जीवन मे मुश्किलें बहुत आती हैं,
मगर माँ है पास जिसके,
उसे मुश्किलें रास नही आती हैं।।
माँ नाम लूँ तो नींद अच्छी आती है।।
जैसे जल बिन मीन है तड़पे,
वैसे बिन माँ के जन हैं तड़पे।
सवेरे हो या सांझ,
लिये नाम बिन उनके नहीं होती है मेरी,
जिनकी माँ नहीं होती दुर्भाग्यवश,
माँ नाम ही बदलते भाग्य उनके।।
माँ नाम लूँ तो नींद अच्छी आती है।।

कवि परिचय

नाम : **श्री सुनील लम्बाड़ी**

पिता : श्री राजीराव लम्बाड़ी

माता : श्रीमती मल्लूबाई

जन्म तिथि : 08–11–1992

पद : सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भोपालपटनम में लैब टेक्नोलॉजिस्ट पद पर कार्यरत्।

शैक्षणिक योग्यतायें : विज्ञान में स्नातक, समाजशास्त्र में एम ए

पता : ग्राम गोल्लगुड़ा,भोपालपटनम
बीजापुर (छ.ग.)

जीवन

जीवन एक टकराव है,
कहीं धूप कहीं छाँव है।
काँटो के बिछोने है,
फूलों के भी सेज है।
दुनियां में झर–झर झरनों से,
प्रकृति की मिठास भी है।
मन की अन्तर वेदना में ,
मनन की शक्ति है।
तन के नस–नस में,
बाजुओं की असीम ताकत है।
तर जाए तन–मन से,
कर,सम्भल जाए मेल–मिलाप से।
जीवन एक टकराव है,
कहीं धूप कहीं छाँव है।
शाश्वत जन्म मृत्यु है,
वृद्धि, विकास,सफलता भी है।
मृत्यु का विचार छोड़ दे,
तन का मोह छोड़ दे।
परहित कर परमगति पा ले,
यह तुम्हारा परम् उद्देश्य है।।
जीवन एक टकराव है,
कहीं धूप कहीं छाँव है।।

नशा

घर–घर की ये कहानी क्यों है,
झगड़े की मूल मादक क्यों है?
नजर है आता आमजन चुप क्यों है,
सर्वनाश करता नशा,जन सोता क्यों है?
आंदोलन होते, अभियान चलाते
मन्द होती खबरें, हमारे नेता चुप क्यों है?
सवाल दर सवाल लिस्ट बढ़ती जाए,
समझ नही आता, समाज भी चुप है
डूबें तो फिर तर नहीं पाते,
उन्मात हैं लोग, क्यों जाग नहीं पाते।
नशा तो नाश करती है सबका,
एक परिवार भी नशे में डूबे रहता।
तन–मन–धन से होता विनाश,
विकार–विकराल सुरसा सी करती ग्रास।
समस्या है तो, समाधान भी है,
दरकिनार करता आदमी हैरान क्यों है?
तू घर की देवी, सशक्त हो जा
सज्ज होकर, सब सन्तुलन कर देना।
हाथों में चूड़ी ही, हथियार बनेंगे,
परिवार संवरेगा तेरा, फिर खामोश क्यों है?
जरा सोच तेरा भविष्य में तमस ही है।
ये दारू की बोतल बुलाता क्यों है,
जनमानस इसे गले में लेता क्यों है?
सँवरना–बिगड़ना सब तेरे हाथ में है,
नशा मुक्त रहो या सराबोर रहो।।

चलो न आज पढ़ने जाते हैं

चलो न आज पढ़ने जाते हैं,
कुछ पढ़कर कुछ समझ आते हैं।
गढ़तें है विकास सब शिक्षा पाकर,
चलो न आज कुछ सीख आते है।

किताबें तो कहती बनालो साथी,
क, ख, ग से गढ़ेंगे जैसे दिया और बाती।
बस्ते में मेरी खजाने लिए तुम,
चलो न आज कुछ बिखेर आते है।

क्या गरीबी, क्या अमीरी मेरी,
रहता ज्ञान भरपूर सब में सारी।
जरा टटोलो मिलेगा ज्ञान के मोती,
चलो न आज दीप जला आते है।

कलम चला, करोगे नाम रौशन अपना,
रोड़े आये, विपदा आये बने भाग्य अपना।
गुरु–ज्ञान तुम्हे कर देगा भव–पार,
चलो न आज कुछ तपकर आते है।

अज्ञान का तमस मिटेगा तभी,
ज्ञान की ज्योति जलाओगे तभी।
शिक्षा का यह सार यही है,
चलो न आज कुछ पढ़कर आते है।

दृढ़–शक्ति,कुशाग्र–बुद्धि है तेरी,
चलना ज्ञान–मंदिर,पट खुलेगी तेरी।
सब झमलों में अब क्या पड़ना है,
चलो न आज कुछ बन आते है।

चलो न आज कुछ पढ़ आते है,
शिक्षा का सूरज चमका आते है।

मन–मंदिर में ज्ञान समा आते है,
दुनिया में नाम रौशन कर आते है।
चलो न आज पढ़ने जाते है।
चलो न आज पढ़ने जाते है।।

किसान

मैं खेतिहर श्रृंगार धरा का,
सदा से ही सुसज्जित करता हूँ।
कितने रंग बिखरे चेहरों में,
स्वाद सभी को दे पाता हूँ।।
अन्न उपजाते क्षुदा पूर्ति कर,
हर तन को स्वस्थ बनाता हूँ।
मैं माटी से लिपटा रहता,
अपने स्वेद से लबरेज रहता हूँ।।
कर्म मेरी यही प्रथम पूजा है,
हरियाली का परिधान सजाता हूँ।
हाँ मैं किसान हूँ, भाव मुझे ये प्यारी है,
मुझमें कोई गुमान नही,बस सरलता बुनता हूँ।।
देखो मेरी व्यथा आज की,
अपने हक के लिए ही लड़ता हूँ।
राजनीति के चक्रव्यूह में,
मकड़ी जाल–सा फँसा मिलता हूँ।।
अशिक्षा–अज्ञान, गरीबी–लाचारी,
फिर भी स्वाभिमान से जीना चाहता हूँ।
मेरे कंधों में परिवार का सारा भार है,
लेकिन प्रपंच में जकड़ा रहता हूँ।।
किससे कहूँ अन्नदाता की दास्तां,
आत्महत्या की खबर मैं सुनता हूँ।
कर्ज से भरा है जीवन मेरा,

आजीवन चुकाता ही रहता हूँ।।
क्या संभलेगा अब जीवन मेरा,
सुधार की आशा हरदम रखता हूँ।।
कैसा होगा अपना जीवन बेहतर,
यही सवाल दर सवाल स्मृति पर उकेरता हूँ।।

मेरा गाँव

सुंदर मेरा गाँव है प्यारा,
सरल है जीवन सबसे न्यारा।
रिश्ते बुनते जाते हैं हरदम,
हर छवि में निखरता प्यार हमारा।

सुनहरी सुबह जब लेकर आती,
पँछी कलरव, गौ हमें जगाती।
कच्ची–पक्की हमारी घर की शोभा,
गोबर से लिपता आँगन अपना।

नीम, पीपल, ईमली की छाँव में,
चौपाल लगता सुबह और सांझ में।
कुछ बुरी कुछ अच्छी बातें सबकी,
बतलाती सभी सखा और सखियाँ सारी।

हल जोत माटी को हरियाली लाते,
फसलों को लहलहाकर खुशहाली पाते।
नवरंग,नवगान, लोकगीतों में सजते,
लोक नृत्यों में थिरकते पग उनके न रुकते।

हर त्यौहार का विधान अलग है हमारा,
समरस,समभाव से होता काम हमारा।
सुंदर मेरा गाँव है प्यारा,
सरल है जीवन सबसे न्यारा।।

बस्तर तुम आना

कहाँ जाते हो? कहाँ आते हो भाई?
भूलभुलैया है, रास्तों की पगडंडी है भाई।।
जरा संभल के आना, हाट–चौराहे है भाई।
कई गढ्ढे खुदे हुए, कहीं बड़े टीले भाई।।
आप है जानो, कैसे हम है भाई।
आतंक की लहूलुहान नदियाँ भाई।।
कहीं गिर जाना, गहरे खाई है भाई।
घना जंगल, काले उल्लू है भाई।।
रमणीयता की सुंदर, छवि है भाई।
लोकगीतों में बसता, मेरी संस्कृति भाई।।
कहीं शोक कहीं खुशी,अपनी आपबीती है भाई।
विद्या से खिलता, कहीं कमल है भाई।।
टोपी वालों की हर बार,वादे नाकाम ही भाई।
कहीं मलीन होती,अक्सर अपनी जिंदगी भाई।।
बोली–भाषाओ से निकलती विविधता भाई।
ये न समझना कोई अलग देश है भाई।।
गोंडी–हल्बी–भतरी का संगम है भाई।
अबूझमाड़ की सुंदर चंचलता है भाई।।
मानो न मानो तुम आना भाई।
बस्तर की हाट–चौराहों को देखना भाई।।
दूध–सा निर्मल नीर है भाई।
झर–झर झरता झरना जरा देखना भाई।।

गुफाओं की अद्भुत गाथा है भाई।
अपनी समृद्धि से गढ़ता अमचो बस्तर है भाई।।
सजना–सँवरना, जरा ठुमके लगाना भाई।
रेला–रे–रेला, में तुम नाच के दिखाना भाई।।

सादगी भरा जीवन, वीरता से भरी बस्तर भाई।
रीति–रिवाज, त्यौहारों का अनुपम संगम है भाई।।
जल–जंगल–जमीन यही हमारा जीवन है भाई।
मरना–मिटना, सब माटी का ये चोला भाई।।

आना तुम आना, मेरी पंक्तियों में न समाता भाई।
बस्तर की गाथा तुम आकर,सब कुछ सब समझना भाई।।

कवि परिचय

नाम : **श्री नागेश मोरला**

पिता : श्री एल्लैया मोरला

जन्म तिथि : 01–07–1978

शैक्षणिक योग्यतायें : एम. ए. (हिन्दी साहित्य)

मो. नं. : 9406160839

ईमेल : nageshmorla143@gmail.com

अनुभव / कार्यरत् : शिक्षक,सरस्वती शिशु मंदिर (10 वर्षों तक)

वर्तमान पद : विकास खंड समन्वयक मितानिन कार्यक्रम भोपालपत्तनम जिला–बीजापुर

अभिरूचि : विता लेखन, समाज सेवा

पता : मद्देड, बीजापुर (छ.ग.)

प्रवासी मजदूर

कोरोना से तो लड़ लूं लेकिन,
इस पापी पेट से लड़ा नहीं जाता।
भूख से बिलखते हुए बच्चों को देखकर,
घर की दहलीज पर चढ़ा नहीं जाता।।
ये मेरी मजबूरी है साहब,
मेरे गाँव में नहीं मजदूरी है।
दो वक्त की रोटी के लिए,
पलायन करना जरूरी है।।
कौन अपना घर छोड़ना चाहता है,
दूसरे शहर जाकर अपनी हड्डियां तोड़ना चाहता है।
कभी कभी तो जिंदगी से हार जाता है प्रवासी मजदूर
कौन अपनों से दूर मौत का कफ़न ओढ़ना चाहता है।।
ये सरकार काम नहीं देती,
काम का समय पर दाम नहीं देती।
सुबह निकलता हूँ काम की तलाश में,
ये तलाश है कि रुकने का नाम नहीं लेती।।
हालात ने मुझे प्रवासी बना दिया,
स्थानीय मजदूर से गैर निवासी बना दिया।
आश्वासन तो बहुत मिलते हैं लेकिन,
अपनी सरकार ने ही मुझे गैर आवासी बना दिया।।

जलवायु परिवर्तन

जिस तरह बदल गये हैं आज
तौर–तरीके और बर्तन।
ठीक उसी तरह हो रहा है
हमारा जलवायु परिवर्तन।।

यूरिया खा रहे हैं और
केमिकल पी रहे हैं।
स्वस्थ जीवन सपना हो गया है
बीमारी का जीवन जी रहे हैं।।

हर सांस में धुआँ और धूल ले रहे हैं
अपने जिंदगी से खुद जुआ खेल रहे हैं।
लालच ने हमें अंधा बना दिया है
इसलिए अभी बेमौसम की मार झेल रहे हैं।।

चिपको आंदोलन से हमने क्या सबक लिया
पेड़ों की कटाई की होड सी लगी है।
उत्तराखंड के ग्लेशियर की घटना देखिए,
अब तो चक्रवातों की भी दौड़ सी लगी है।।

जल बदला जमीन बदला
और बदल गया इंसान।
अभी भी समय बचा है संभलने के लिए
वरना न बचेगा ये सुंदर जहाँन।।

पर्यावरण को प्रदूषण हमने किया
हमारे कारण जलवायु बदला।
खतरनाक परिणाम के जिम्मेदार हम हैं
हमने ही पानी, मिट्टी और वायु बदला।।

भ्रष्टाचार

आज देश भ्रष्टाचार से भ्रष्ट है,
देश को भ्रष्टाचार से बड़ा कष्ट है।
गर भ्रष्टाचार यूं ही चलता रहा देश में,
जल्द ही देश हमारा नष्ट है।।

देश के नेता, अधिकारी, अफसर,
अपनी ही जेबें भरते हैं अक्सर।
पैसा देश का लेकर ये लोग,
खर्च करते हैं अपने ही घर पर।।

मंत्री से लेकर चपरासी तक भ्रष्ट हैं,
इनसे भारत का हर नागरिक त्रस्त है।
भ्रष्टाचार को क्या रोकेगी ये सरकार,
क्योंकि ये सरकारे ही भ्रष्टाचार से ग्रस्त है।।

भ्रष्टाचार आज की सबसे बड़ी बीमारी है,
भ्रष्टाचार की हर शख्स पर खुमारी है।
भ्रष्टाचार को रोकने वाला ही,
देश का सबसे बड़ा भ्रष्टाचारी है।।

बेटी

बेटी है तो रोशन ये संसार है,
बेटी है तो जगमगाता घर द्वार है।
कई बेटियों ने देश में इतिहास रची,
बेटियों को नागेश का प्रणाम बारम्बार है।।

बेटी खनखनाती कनक है,
बेटी चमचमाती चमक है।
बेटी के बिना ये जग अधुरा,
बेटी ही विश्व की दमक है।।

बेटी सर का ताज है,
बेटी पर हर किसी को नाज़ है।
बेटी नहीं तो कुछ भी नहीं,
बेटी से ही ये दुनिया आज है।।

भारत बेटियों के शौर्य गाता है,
भारत बेटियों के किस्से सुनाता है।
झांसी की रानी, दुर्गावती, कल्पना चावला,
अरे बेटी ही तो भारत माता है।।

बेटी से जग में सारा आकर्षण है,
बेटी घर परिवार दर्पण है।
कोई तुलना नहीं है बेटी का,
बेटी के नाम नागेश का जीवन समर्पण है।।

गर्भ समापन

मैं भी इंसान हूँ,
कोई मशीन नहीं।
मेरी पीड़ा भी तो समझो,
मैं मानव प्राण–हीन नहीं।।
कम उम्र में माँ बनकर,
अनचाहा गर्भ धारण कर।
ताउम्र जीना पड़ता है औरत को,
जिन्दगी मर मर कर।।
बहुत परेशानियों का सामना, करना पड़ता है औरत को।
जिल्लत और गैरत भरी जिन्दगी,
जीना पड़ता है औरत को।
जिस तरह गर्भधारण का अधिकार है,
उसी तरह गर्भ समापन का,
अधिकार होना चाहिए औरत को।।
गर्भ समापन के लिए 20 सप्ताह नहीं है पर्याप्त,
अभी भी कुछ कमियां हममें हैं व्याप्त।
गर्भ समापन कानून में संशोधन जरूरी है,
20 के जगह 24 से 26 सप्ताह होना चाहिए प्राप्त।।
गर्भ समापन का अधिकार मेरा अपना है,
स्वस्थ जीवन जीने का मेरा भी सपना है।
कानून ने भी सहमति दे दी है अब तो,
फिर क्यों किसी के सहमति के लिए बिकना है।।

दहेज रुपी दानव

दहेज रुपी दानव हमें निगल रहा है,
अपराधों की आग को उगल रहा है।
अपराध है दहेज का लेना–देना,
फिर क्यूं ये दहेज रुपी दानव मचल रहा है।।

न बात कर बंदे दहेज की,
बेटी अनमोल रत्न है संसार की।
क्या करेगा दहेज लेकर,
थोड़ी फिकर कर अपने भी परिवार की।।

न काम आयेगा ये दहेज,
बहू को रखो दिल में सहेज।
लेन देन का ये मामला नहीं है,
कर लो इस घटिया रीत से परहेज़।।

दहेज न लेने का प्रण करना होगा,
दहेज के खिलाफ अब सबको लड़ना होगा।
बहुत जल चुकी हैं चिताएं दहेज के लिए,
दहेज रुपी दानव को अब जलना होगा।।

कवि परिचय

नाम : **श्री राज गुरला**

पिता : गुरला किष्टेया,

माता : मल्लूबाई,

जन्म तिथि : 15.07.1992

शिक्षा : 12वीं

पता : गोल्लागुड़ा, तहसील– भो, पटनम, जिला –बीजापुर. (छ.ग.)

मेरा बस्तर महान देखो

जंगलों में बाघ देखो बस्तर वासियों में आग देखो़
झर झर झरतें झरने देखों वन में चलतें हिरने देखों!

पक्षियों की चहचहाहट देखों इन वादियों में आहट देखों,
गोलियों की बौछार देखों बिखरतें हुए घर–बार देखों!

वीरों की यहाँ क्रान्ति देखों उनके बदौलत शान्ति देखों,
रोशन होते गाँव देखों यह धूप में पीपल की छाँव देखों!

खिलते हुए फूल देखों बस्तर वासियों की उसूल देखों,
भाईचारा का प्यार देखों इनकी दिलों में व्यवहार देखों !

इंद्रवती की शान देखों बस्तर की पहचान देखों,
नदियों की रवानी देखों उनमें बसती जवानी देखों!

माँ के आचल से लिपटी ये वनराय देखों,
माँ दन्तेश्वरी की भक्ति में रमता ये प्यारा धाम देखों !

ढोलकल की उँचाई देखों उन पर गगन की परछाई देखों,
संकनी–डंकनी की उमंग देखों दो नदियों का संगम देखों!

मेरी किस्मत की बात देखो मुझे

आज फिर मैं अपना कलम चला रहा हँ,
मुझ पर जो गुज़री वो सितम लिख रहा हूँ ।

कभी टूट गया कभी तोड़ा गया दिल को मेरे,
उस टूटे दिल पर यादों की मरहम लिख रहा हूँ।

अब ना कोई किनारा है और ना कोई शाहील,
मेरे साथ जो बीता वो मुश्किल लिख रहा हूँ।

आज फिर मैं अपना कलम चला रहा हूँ,
दास्ताँ ए मुहब्बत की करम लिख रहा हूँ ।

जरा संभला हूँ फिर फिसला गया हूँ,
ऐसे हालातों की मैं सफ़र लिख रहा हूँ।

कोई हँस रहा मेरा दर्द ए मुहब्बत को देखकर,
मैं कलम से उन हँसीमंदों का नाम लिख रहा हूँ।

कोई रोक सकता है तो रोक लो मुझे,
मैं अपनी दर्द की वो दास्ताँ लिख रहा हूँ।

आज फिर मैं अपना कलम चला रहा हूँ,
मुझ पर जो गुज़री वो सितम लिख रहा हूँ।

क्या लिखूँ

क्या लिखूँ।।
गुज़रा हुआ कल लिखूँ,
या गुज़रता हुआ पल लिखूँ।

तेरे इश्क़ की दास्ताँ लिखूँ,
या तेरे घर का रास्ता लिखूँ।।

क्या लिखूँ।

तेरे लिए मेरे दिल में उल्फत लिखूँ,
या उल्फत में गुज़री वो रुख़सत लिखूँ।

कभी दिल की तन्हाई लिखूँ,
या दिल पर तेरी परछाई लिखूँ।

क्या लिखूँ।

तेरे याद में शामिल रातें लिखूँ,
या तुमसे की गई बातें लिखूँ।

बातों –बातों में की गई वो लड़ाई लिखूँ,
या उसके बाद हुई वो जुदाई लिखूँ।

क्या लिखूँ।
कुछ तेरे नाम के चर्चे लिखूँ,
या तुम्हारे लिए किए गए खर्चे लिखूँ।

तुझे भूल जाने की दवा लिखूँ,
या तुमसे मिलने की दुआँ लिखूँ।।
क्या लिखूँ।।
इश्क़ में आशिकों की दिल लिखूँ,
या उन पर गुज़री वो मुश्किल लिखूँ ।।

कभी तोड़ा तो कभी कम लिखूँ,
तेरे इश्क़ में इतने गम लिखूँ।।

क्या लिखूँ।।
कभी शाम लिखू कभी सुबह लिखूँ,
अब तू ही बता तेरे लिए क्या–क्या लिखूँ।।

नजरों से गिरकर

नजरों से गिरकर संभला हूँ मैं,
आप पहाडों की बात करते हो।

तुम ज़रा हाथ तो थाम लो,
इस दुनियाँ से क्यों डरते हो।

कुछ बात है तो बता दिया कर,
तुम मेरे हो ये जता दिया कर।

मुश्किलों को हटा कर चलते हैं,
हम वो नही जो दूसरों से जलते हैं।

कभी फुरसत मिले तो चले आना,
नजरों से गिरने की राज़ बताता हूँ।

वो सरेआम ना हो,
इसीलिए मै उसका नाम छुपाता हूँ ।

ज़रा बताना ये अदा कहाँ सीखी है गम छुपाने की,
हाल तो बेहाल है तुम बात करते हो मुस्कराने की ।

नजरों से गिरकर संभला हूँ मै,
आप पहाड़ों की बात करते हो।

हक़ीकत में तो आया नहीं जाता तुमसे,
और ख्वाबों मे आकर मुलाक़ात करते हो।

नजरों से गिरकर संभला हूँ मैं,
आप पहाड़ों की बात करते हो।।

अधुरी ख्वाईश

चलो उसकी ख्वाईशें भी पूरी करते हैं,
उसकी नज़रों से कहीं दूर चलते हैं।

ये मुनासिब होगा वो हमें भूल जाएँ,
इससे पहले कि हम उसे छोड़कर चलते हैं।

उसे कैद कर रखा था मैं अपनी यादों में,
चलो वक्त आ गया है उसे रिहा करते हैं।

सुना है उसके शहर में बारिश नहीं हो रहें है,
चलो उसके शहर को आँसूओं से भीगोकर आते हैं।

सुना है वो भी कई दिनों से तन्हा है,
चलो उसे थोड़ा हँसाकर आते हैं।

कई मर्तबा ऐसा ही हुआ मेरे साथ,
चलो एक मर्तबा और एतबार करके देखते हैं।

लगता है उन्हें जमाने की बहुत फ़िक्र होती हैं,
मुश्किलों में कौन किसका होता ये भी परखते है।

चलो उसकी ख्वाईशें भी पूरी करते हैं,
उसकी नजरों से कहीं दूर चलते हैं।।

बस्तर की शान इंद्रावती मेरी जान,

कल–कल बहती निर्मल धारा,
तेरे दर्शन से मेरा होता हैं सवेरा।

प्राणदायणी निर्झणी तरंगणि प्रवाहिनी
अनेक नाम तेरे,
तू ही निश्चल तू ही निस्वार्थ तुझमे में सारे नीर भरे।

तेरे आभूषणों का क्या कहना हैं चारों ओर हरियाली हैं,
तुम बस्तर की शान हो हर बात तेरी निराली हैं ।

कितनों की प्यास बुझाई है कितने तेरे चरनों में,
झर झर झर रहीं हैं जल चित्रकूट की झरनों में।

खेत खलियान भी तेरे सानिध्य में लहर रहा रहे,
तुम्हारी कृपा है माँ तेरे नाम से कई घर मुस्करा रहे हैं।

बदलता हुआ वक्त और बहते हुए पानी में बह जायेगें,
पर जब तक जिंदगी है तब तक तेरे गुण गायेंगे।।

बस्तर की शान इंद्रावती मेरी जान,
तू सबसे पहले इसकी महिमा को पहचान।।

कवि परिचय

नाम : **श्री छेदी लाल टण्डन**

पिता : श्री लच्छीराम टण्डन

माता : सतलोकी श्रीमती जुगमत बाई टण्डन

जन्म तिथि : 04–01–1967

शैक्षणिक योग्यतायें : स्नातक

पता : जेल लाइन, बीजापुर (छ.ग.)

शिक्षक दिवस विशेषांक

पहले गुरूजी कहते थे,
जिन्हें अब शिक्षक है कहते,
पहले पड़ते थे डंडे,
अब तो गाली नहीं सहते।
है ज्ञान का सागर गुरूजनों की वाणी में,
क्यों भूल जाते हैं, यादें क्यों नहीं रहते।।
गुरु से ज्ञान मिलता था,
शिक्षक देते हैं शिक्षा।
गुरुवर तप कराते थे,
शिक्षक लेते हैं परीक्षा।।
पहले गुरुकुल होते थे,
पढ़ना पड़ता था रहकर।
कड़ी मेहनत भी करते थे,
भूख प्यास को सहकर।।
अब हम जाते हैं स्कूल,
लेकर पुस्तक और कापी।
शिक्षक पाठ पढ़ाते हैं,
होती गलती की माफी।।
न गुरुजी,न शिक्षक,
अब तो टीचर हो गये।
बच्चे आये तो स्कूल,
मगर आते ही सो गये।।
समय के साथ हुआ,

पदनाम में ऐसा परिवर्तन।
शिक्षक, टीचर, लाकर हमसे
छीन लिये, गुरुजन।।

छत्तीसगढ़ी महान

छत्तीसगढ़ी में गुरुजी, हिंदी में शिक्षक,
अब अंग्रेजी में टीचर हो गये,
ये सब समय का फेर है संतों,
हम कहाँ थे, अब कहाँ खो गये।।
छत्तीसगढ़ी में दाई, हिंदी में अम्मा,
अंग्रेजी में मम्मी कहते हैं,
चाहे घर कहें, मकान कहें,हाउस कहें,
चाहे होम, मगर हम वहीं रहते हैं।।
एक बात तो है,छत्तीसगढ़ी में,
अपनापन और लगाव मिलता है,
रिश्ते नाते, दया, धर्म, का,
सुंदर अपना भाव मिलता है।।
आप देख लीजिये खुद बोलकर,
पता ही चल जायेगा,
दाई,ददा, भैया, भौजी,
जैसा मजा कहाँ आयेगा।।
बोल लीजिये, अंकल, आंटी,
दूर के रिश्ते लगते हैं।
काका, काकी, बोलकर देखें,
अपनापन झलकते हैं।।
मैं नहीं कहता, अंग्रेजी को,
पढ़ना, लिखना छोड़ दें,
मैं यह भी नहीं कहता,

बाकी जितनी भाषाएँ हैं
सबसे रिश्ता तोड़ दें,
मैं तो यह भी नहीं कहता,
सभी भाषाओं से अपना मुँह मोड़ दें,
मैं तो बस इतना कहता हूँ,
सभी भाषाओं का रखें ज्ञान।
सबसे हमें मिलती शिक्षा,
सभी भाषाएँ एक समान।
चूंकि मैं हूँ छत्तीसगढ़ का,
छत्तीसगढ़ी ,सबसे महान।
छत्तीसगढ़ी सबसे महान।
छत्तीसगढ़ी सबसे महान।।

हमें डर लगता है

कभी किसी की मीठी बोली से,
कभी किसी की हँसी ठिठोली से,
कभी अपने ही हमजोली से,
कभी लोगों की भरी झोली से।
हमें डर लगता है।।
कभी अपनों के अपनेपन से,
कभी औरों के,सपनेपन से,
कभी सुंदर मन,सुंदर तन से,
कभी गाते हुए गुरुबन्दन से।
हमें डर लगता है।।
कभी लोगों की आजादी से,
कभी अपनों की बर्बादी से,
कभी कपड़े पहने खादी से,
कभी, बूढ़े दादा–दादी से,
हमें डर लगता है।।
कभी लोगों की व्यवहारों से,
कभी आये तीज त्यौहारों से,
कभी घनिष्ठ मित्र और यारों से,
कभी ऊँची खड़ी दीवारों से,
हमें डर लगता है।।
कभी अपनी इस सच्चाई से,
कभी रिश्ता भाई भाई से,
कभी पर्वत की ऊँचाई से,
कभी गहरी झील और खाई से।

हमें डर लगता है।।
कभी गाँवों की इन गलियों से,
कभी नदी की इन मछलियों से,
कभी फूलों की कलियों से,
कभी उड़ती हुई तितलियों से,
हमें डर लगता है।।
लोगों को यहाँ बुलाने से,
लोगों के घर, हमें जाने से,
कभी सीधी राह दिखाने से,
कभी हाथ पकड़ ले जाने से,
हमें डर लगता है।।
अपनों से नजर चुराने से,
गैरों से आँख मिलाने से,
आपस में गले मिलाने से,
अपनों के पीठ,सहलाने से,
हमें डर लगता है।।
कभी कोई गीत भी गाने से,
कभी मन ही मन मुस्काने से,
कभी अपना दर्द छुपाने से,
कभी अपना गम भुलाने से ,
हमें डर लगता है।
पता नहीं, बस डर लगता है।।
हमें डर लगता है।।

सौतन तेरी अजब कहानी

दो सगी बहनें जब बन जाती हैं सौत,
बहन के रिश्ते फिर मर जाती बेमौत।
दोनों के बीच सिर्फ, सौत का रिश्ता होती है,
जहाँ एक ही पति के साथ अपनी
खुशियों की माला पिरोती है।
खुश तो दोनों ही नहीं हैं,
बस ईर्ष्या की आग में जलते हैं,
इन सबके बीच में पति भी,
अपना हाथ मलते हैं।
कल तक थीं जो प्यारी बहनें,
राजदुलारी होती थीं,
हँसती थीं दोनों साथ में मिलकर,
साथ में दोनों सोती थीं।
एक थाल में करतीं भोजन,
जूठन संग संग धोती थीं,
एक के पैर में कांटा चूभती
दोनों संग संग रोती थीं।
समय ने ऐसा बदला करवट,
रिश्ते में बदलाव हुई,
बहन, बहन जब बन गई सौतन
रिश्ता हो गई छुई मुई।
बहनौं के अब प्यारे बच्चे,

भी कहलाते सौतन के पूत,
भेदभाव भी ऐसे करते,
जैसे हो वे महा अछूत।
सौत तो आखिर सौत ही होती,
बहनें हो या पराई हो, ईर्ष्या,
द्वेष में जलते दोनों,
चाहे कितनी अच्छाई हो,
जिस घर होती है सौतन,
वे घर होते नर्क समान,
खुशियाँ सारी दूर भागती,
बदल जाती है,खान और पान।।

कवियों की कार्यशैली

कवियों की कोई जाति नहीं,
कोई धर्म नहीं, कोई भेद नहीं।
कवि तो सिर्फ कवि ही है,
इनके मन में कोई छेद नहीं।।
स्वतंत्र विचारक होते हैं,
जो मन की बातें लिखते हैं।
कुछ काल्पनिक भी होती है,
कुछ हकीकत में भी दिखते हैं।।
कवियों में ऐसा गुण है,जो,
हँसाते और रुलाते हैं।
बस मिलती रहें तालियाँ उन्हें,
मेहनत का फल पाते हैं।।
उनका भी रहता है अपना,
छोटा सा सुंदर परिवार।
आशीर्वाद, चाहत रखते हैं,
सुखी रहे सबका संसार।।
पलक झपकते कविता लिखते,
जैसे माहौल दिखते हैं।
मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर, और,
गुरुद्वारे में मस्तक टिकते हैं।।
सब देवों को शीश झुकाते,
करते हैं सादर प्रणाम।

सभी धर्मों की करते पालन,
दर्शन करते चारों धाम।।
कभी किसी की भावनाओं को,
नहीं चाहते ठेस लगे।
बस चाहत होती है इनमें,
मनोरंजन हो,और फ्रेस लगे।।
कवियों की बस एक तमन्ना,
लोग हमेशा खुश रहें।
मन की पीड़ा त्यागें श्रोता,
आनंदित महसूस करें।।
आनंदित महसूस करें।
आनंदित महसूस करें।।

मेरा बस्तर

बस्तर मेरी जान है
आन बान और शान है।
हमें बहुत अभिमान है
यह धरा बहुत महान है।।
यहाँ बड़े–बड़े जंगल जिसमें
शेर भालू चीते रहते।
यहाँ झरना, जलप्रपात भी हैं
झर झर झरने है बहते।।
हैं बड़ी बड़ी गुफाएँ यहाँ
कैलाशगुफा, कुटुम्बसर है।
जब जायेंगे इनके अंदर
सब कांपे डर से थर थर है।।
केंद्र बिंदु है आस्था का
देवी–देवों का वास यहाँ।
कुछ समय बिताये प्रभु जी ने
श्री राम चन्द्र वनवास यहाँ।।
हैं चित्रकोट, झरना तीरथगढ़
लगता बड़ा मनोरम है।
डंकनी–शंकनी नदियों की,
बहुत ही सुंदर संगम है।।
आकाशनगर बचेली तो
बैलाडीला कैलाशनगर।
लोहे की है खान यहाँ

जो भेज रहे हैं दुनिया भर।।
सीधे साधे लोग यहाँ
बिलकुल ही भोले भाले हैं
न छल कपट न बैर भाव,
ये दिल के गजब निराले हैं।।
बिन बस्तर छत्तीसगढ़ का,
नक्शे में नाम अधूरा है।
साक्षर बस्तर,सुंदर बस्तर
नारे में सपना पूरा है।।

कवि परिचय

नाम : **श्री दिलीप उसेंडी**

पिता : स्व. श्री मोची राम उसेंडी

माता : श्रीमती सोनाय उसेंडी

जन्म तिथि : 15–07–1991

पद : सहायक विकास विस्तार अधिकारी, जनपद पंचायत बीजापुर (छ.ग.)

शैक्षणिक योग्यतायें : एम.ए. (समाजशास्त्र)

मो. नं. : 9479141467

विद्या : कविता, शायरी कहानी।

पता : जनपद पंचायत कालोनी, बीजापुर (छ.ग.)

शहीद–ए–दर्द

जब उनकी नजर पड़ी तस्वीर पर,
वो दामन में छुपके रोए तो होंगें,
मैं सो गया सदियों के लिए,
वो आज तक सोएँ न होंगें ।।

माँ ने कहा वो आएगा,
पापा ने उनको झुठलाया होगा,
मैं सो गया सदियो के लिए,
वो आज तक सोएँ न होंगें ।।
यारों में बनी फिर पैग चार,
कुछ आँसू उसमें मिलाए तो होंगें,
मैं सो गया सदियों के लिए,
वो आज तक सोएँ न होंगें ।।

जाता था सरहद को ये आम था,
गलियों का बहकना खुले आम था,
चिड़ियों का चहकना सरेआम था,
आया था लिपट के तिरगें में मैं,
ए गलियॉ न जाने क्यों सुनसान थें,
मै सो गया सदियों के लिए
वो आज तक सोएँ न होंगें ।।
काजल की टीका लगाती थी माँ,
गिरने से पहले पकड़ते थे पा,
दर्द से मेरे तड़पते थे वो,
उन हाथों से मुझको जलाया तो होगा,
मैं सो गया सदियों के लिए,
वो आज तक सोएँ न होंगें ।।

तुम्हें लिखते रहें

बहुत दर्द है सीने में वो दर्द लिखते रहे,
तुम ढूढँती रही उनके लब्जों में अपना नाम,
हम तुम्हे लिखते रहें।
दोस्त करते रहे गजलों की नुमाईश
और हम तुम्हें लिखते रहें।।

सुर्ख होठों की लाली आँखों को सागर लिखते रहे,
और यूं छुड़ाई दामन तुमने,
हम सिसकियाँ लिखते रहें,
दोस्त करते रहे गजलों की नुमाईश,
और हम तुम्हें लिखते रहें।।

खता भी पहली, सजा भी पहली,
तुम हाथों में सुहाग की मेहंदी लिखते रहें,
यूं ढूँढ़–ढूँढ़ कर जोड़े थे यादों के मोती,
सुबह को तुम्हें शामों को शराब लिखते रहे,
दोस्त करते रहे गजलों की नुमाईश,
और हम तुम्हें लिखते रहें।।

जुल्फों को सुकुन पलकों को जहान लिखते रहें,
तुम ढूँढ़ती रहे उनके सीने में धड़कता दिल,
और हम ये पैगाम लिखते रहे
देखा नहीं शायद तुमने हम तड़पते दिल से
तेरे माथे की सिंदूर लिखते रहे,
दोस्त करते रहे गजलों की नुमाईश
और हम तुम्हें लिखते रहे।।

पायल की छम–छम कंगन की खन–खन, लिखते रहें,
प्यार से बिगड़ना तेरे आँखों का हम पर,
हम वो इम्तहान लिखते रहे।।
ले के सात फेरे सात जन्मों का तुम शमशान लिखते रहे,
हम अपने ही जनाजे में तेरा नाम लिखते रहें,
दोस्त करते रहे गजलों की नुमाईश,
और हम तुम्हें लिखते रहें।।

हारी कहते हैं

तुम दुख किसे कहते हो, जो हर पल दुःख में रहते हो,
दुःख को देखा है, पर जाना नही,
सुख को कभी पहचाना नहीं,
लोग मुझे दुखयारी कहते है
दुनियाँ से हारी कहते है,
मैं तो जीने के लिए तलाशती हूँ कुछ,
पर लोग मुझे भिखारिन कहते है ।।
जर हो चुका है बदन मेरा,बोल के कुछ मांगा नही जाता,
तुम्हारे महलों के नीचे झोली फैलाए खड़ी हूँ,
जो रोटी कुत्तों को दिये डाल,
वो इस झोंली में डाला नही जाता,
आश है अभी भी दो मुट्ठी पाने की,
ज्यादा लूंगी नही ताकत नही उठाने की,
कदम डगमगाते हैं चार कदम चलने
की पर लाठी टेक बोझा रख थोड़ा, आराम फरमाती हूँ।
लाठी उठाने की हिम्मत नहीं
पर पेट के खातिर, गली गली जाती हूँ।।
सफेद बाल जो कुछ ही बचे हैं, कई दिनो से सवारा नहीं,
चेहरे पर ए झुर्रियॉ–हाय चेहरा अब प्यारी नही ,
बदन पर दो फूट की पट, जिससे रहती हूं मै लिपट,
कमर नीचे कुछ झुक गई है, जैसे टहनी टूट गई हो,
पर मै हारी नहीं,
लोग मुझे दुखियारी कहते है दुनिया से हारी कहते है,
मैं तो जीने के लिए तलाशती हूँ कुछ,
लोग मुझे भिखारिन कहते हैं ।।

साँझ और तुम

तुम दूर होकर भी हर पल पास होते हो,
हमारी इक–इक साँस होते हो,
सपना हो या कोई अफसाना,
जख्मों में मरहम सा एहसस होते हो।।

खुदा का कोई ईबादत सा,
दुवाओं की फरियाद होते हो,
कर लो यक़ी ऐय फरिश्ते,
हमारे हर–राज के राजदार होते हो।।

तन्हाईयों में हमसफर,
जीने की चाह होते हो,
ऐय रब के नूर
हमारे हर धड़कन के पहरेदार होते हो ।।

गुस्ताखियॉ माफ हो ऐय,
मेरे सॉसों के मालिक,
तुम बीन अधुरे है हम,
हम साँझ और तु चाँद होते हो,
दूर होकर भी पास होते हों ।।

बस्तर देखोगे

उड़ते मैना, झुरमुट झाड़ियाँ, केशकाल,
दरभा, झीरम, सतरंगी घाटियाँ
हाय ये सतरंगी घाटियाँ,
उफनती इन्द्रावती, सातधारा, तामड़ाघुमर,
चित्रकोट नाचते मोरों का झुण्ड देखोगें,
तीरथगढ़ से गिरते हुए हीरे सा पानी देखोगें,
आओ बस्तर देखोगे ।।
नहीं–नहीं, नहीं मत मारो साहब सोमारू को,
उस बेवा की चित्तकारे देखोगे,
सड़ती लाशे, लुटती आबरू, उजड़ता बचपना,
गोलियों की रासलीला देखोगे,
बस्तर हूँ सहाब मुझमें भी जान है,
और कितने इम्तेहान देखोगें,
आओ बस्तर देखोगे ।।
दण्डक की कर्म भूमि ऊँचे सागवन, साल
अर्ध ढके तन प्रफुल्लित जन
रेला रेलो रे रेला में झुमते ये आँगन,
हाय ये आँगन
गर्भ में लोहा, सोना, हीरा,

बादलो से ऊपर उड़ता आकाश नगर,
रावघाट, आगोश में छुपाये मेमनो को वो मादाएं,
कितने वनो के सिंगार देखोगे,
आओ बस्तर देखोगे।।
जापान तक पहुँच गई जंगलों को चीरती हुई रेलगाड़ी,
अब तक पगडंडियों से शिक्षा की सा भी ना आई,
पकड़ लो सालों को मुखबिरी करते है,
नहीं नहीं सहाब हम तो स्कूल मे पढ़ते है,
नमस्कार ब्रेकिंग न्युज मुठभेड़
एक जवान लेकामी शहीद,
दो ईनामी माओवादी कोरसा, वाचम की लाश बरामत,
एक ही गाँव से तीन अर्थियाँ सजती है,
कौन बाहरी मरा है साहब,
कुछ कन्धों मे मेडल सजती हैं,
घेर लो बियाबान को, विकास करना है,
धड–धड, धड वो शोर, फिर सन्नाटा,
ताडमेटला से जलती हुई, झोपड़ियों की लपटे देखोगे,
लुटी आबरू बे–सहारा बैठी माँ,
स्तन से चुबकता मासूम देखोगे,
मै बस्तर हूँ साहब मुझमे भी जान है,

और कितना इन्तहान देखोगे
आओ बस्तर देखोगे।।
दन्तेश्वरी की पावन धरा, गुंजती जय–जय कारा
गेंद सिंह, यहीं ब्रिटिश सरकार को ललकार,
ये मांदर की थाप, वो गौर नृत्य,
थिरकते मदमस्त यहां के मदहोश रहवासी,
आदिवासी आओ बस्तर देखोगे।
ये पार्टी को जीताना है, लाल हरा नीला, झण्डे पोस्टर,
फला, भैईया को जीताना है, फिर
तुम कौन हो बे? जंगली जानवर
पूरी बस्तर को बदनाम कर रहे हो,
डालो सालों को जेलों मे,
बुधरू, सोमारू, भागो –भागो पुलिस आई
नहीं भागो लाल साये ने घेर लिया,
इधर से गोली, उधर से गोली,
कितने बेगुनाहों को जेलों मे सजा काटते देखोगे।
मैं बस्तर हूँ साहब मुझमें भी जान है।
और कितना इन्तहान देखोगें
आओ बस्तर देखोगें।

जमाने किधर गये

जाने वो गुलिस्ताँ के जमाने किधर गये,
दीदार को तेरे, करते थे बहाने,
वो बहाने किधर गये।
रूसवा हुई जबसे तुम ख्वाबों के
वो आसयाने किधर गये,
लौट कर देखा वो गुलशने बहार को,
वो नज़ारे किधर गये,
पतझड़ की बयांर उड़ा ले गई शायद,
तलाशा हर शहर में तेरी हँसी,
गूंजा करती थी जो इन वादियों में,
खबर नहीं जाने किधर गये,
जाने वो गुलिस्ताँ के जमाने किधर गये।।
पलट–पलट कर ढूंढता रहा,
उन किताबों को लिखे थे जिनमे तेरा नाम,
वो सूखे गुलाब किधर गये,
कोशिश की कभी मिटाने की,
मेरी हथेली से अपना नाम,
तेरी मेहंदी में वो नाम आज भी है,
न जाने वो ज़ख्म किधर गये,
पुकारा हर शहर जा–जा कर तेरा नाम,
मेरे लब्जों में वो नाम आज भी है,
न जाने वो लब्ज़ किधर गये
जाने वो गुलिस्ताँ के जमाने किधर गये।।

कवि परिचय

नाम : **कु बी रीना**

पिता : स्व. बी. रामचन्द्र

जन्म तिथि : 04–03–1980

पद : शिक्षक

शैक्षणिक योग्यतायें : एम.ए. (हिंदी,राजनीतिशास्त्र), बी.एड

मो. नं. : 6267810946

पता : ग्राम–भोपालपटनम
जिला–बीजापुर (छ.ग.)

माँ

तमन्ना मन से है।
न टूटे मन माँ से।
मन मंदिर मे रहे माँ।
मन्नत यही है माँ से।
मूरत है मेरी माँ की।
मोह समा है माँ की।
मधुर मधुर है माँ का स्वर ।
मन भर जाता है माँ का प्यार ।
मर्म कई है कर्ज कई है ।
मंजर हूँ मैं फर्ज कई है।
मन में पीड़ा है कर्ज चुकाना है।
मोहब्बत तेरी फिर बरसाना है।
महके फिर घर आँगन।
माँ के मधुर स्वर से।
महिमा है तेरी इस जग में ।
मोल नही अमूल्य है इस युग में।
मानवता के मन मंदिर में।
माँ का स्नेह ही पाना।
मूल मंत्र माँ में ही है।
मूर्ख तुम हो न जाना।
मनसा मेरी मन से है।
मुक्त माँ से न हो जाना ।

अशिक्षा

अशिक्षा है,अन्धकार।
न रख मन में अंहकार।
अशिक्षा से न होना शिकार।
शिक्षा से लाना,जीवन मे निखार।
उलझनों मे होगा ,जीवन।
बीत जाएगा, सफलता का यौवन।
जीवन ठहर जाता है।
जगत अँधेरा होता है।
नकार दे, मन से ये विचार।
कलम से करले, सपने साकार।
अक्षरो का होगा,पूरा संसार।
ज्ञान का होगा, जीवन में पसार।
भटके मार्ग का, कर बहिष्कार।
है, ताकत कलम की, कर ले स्वीकार।
बढ़ा अक्षरो, की रफ्तार।
जीवन मे आए नये अवतार।
ज्ञान रस है, विराट।
संकल्पो से, बनो तुम सम्राट।
ज्ञान कलम से खिलेगें कमल।
उम्मीद, संघर्ष का हो अमल।

भ्रष्टाचार

खिली भू पर जब से तुम, भ्रष्टाचार,
हो रहे, दंगे फसाद से सब लाचार।
कलम की हुनर भी क्या कमाल है,
सफेद झूठ से ही, करती धमाल है।
चंद नोटो के खातिर,
रिश्वतखोर बन जाते है।
झूठी स्याही से ही, आँकड़े उभारे जाते हैं
खिली भू .....
बदल रहा है, भ्रष्टाचार का रूप यहाँ।
कभी कागजो मे तो, कभी प्रतिशत में
व्यापार है उपहार के रूप मे यहाँ।
भौतिकता के बाजार में,
मिटती नही है,..... भूख,
किसी की रोटी तो, किसी का चारा खा जाते है ,
झोपड़ियों से महल बनाने का वादा कर जाते है।
खिली भू .....
सारी दुविधा प्रतिशत पर है,
वरना सत्य की कलम झुकती क्यों है।
रूपयों की गंध, सारी दफ्तरो में फैली है,
रूपयों की गंध, सारी दफ्तरो में फैली है,
ये ऐसी इत्र है, जो सारे जहान में है
पतन का पथ है, ये भ्रष्टाचार ,
रिश्वतखोर ही है, इसके रिश्तेदार
खिली भू पर जब से तुम..... भ्रष्टाचार

नशा नाश है

नशा, नाश है
फिर भी चल पड़ा, पीने वाला।
किसी की रोटी पकती इससे,
किसी की रोटी जलती इससे,
न समझकर चल पड़ता,
पीन को, पीने वाला।
नये जगह पर चल पड़ता तो,
मिल जाता, दारू वाला
रोटी नही मिलती, किन्तु,
मिल जाता,दारू वाला।
कई घर मदिरा से ही चलता,
मजबूरी से ही बेचना पड़ता,
अलग अलग है दोनो,फिर भी,
साथ किसी का न छूटता।
कई होली, कई दिवाली,
गम में ही बीत जातें हैं,
आँसू की बहती धारा से ही
सारे उमंग ठहर जाते है।
फिर भी चल पड़ता, पीने वाला।
जल जाते है, देह के अंग,
यह समझकर अब मत पीना,
पल भर की है, मौज इसमे,,,,,
भाव मन में, बीज बोना।

दहेज का त्याग

तौल दिया बेटी को
क्या मूल्य बेटी का होगा?
रस्मों के कुछ नाम रखे
बेटी के अरमानों का क्या होगा
निर्जीवों के मूल्यों में
जीवों का क्या होगा
कुछ शौक की पूर्ति में
बेटी के शव का ढेर होगा
सास भी एक बेटी है
माँ भी एक बेटी है
फिर क्यो नही समझा जाता है
फिर क्यो बेटी को तौला जाता है
दिन के उजालें में
दहेज दानव मिल जाते है
बेटी के अरमानों को
मोटी रकमो से तौले जाते है
नौकरी वाली बहु की चाह में
मान अपनी घटा जाते है
दहेज न दे तो, देह जला जाते हैं
लाडो में पली, लाखो मे बिक जाती हैं
सौदा ऐ माता–पिता से कर जाते हैं

दहेज का हो पतन अब
खुशहाल रहे, हमारे सदन अब
दहेजभाव को त्याग दो
बहु भी बेटी है, स्वीकार दो
ईश से विनय है अब इतनी
समाज मे न रहे दहेज इतनी

तलाश

मुठ्ठी कभी खाली न थी। फिर भी तलाश जारी थी।
जंग जीवन की थी, की खोज जारी थी।
जीत मेरी हताश थी।
हर बार संघर्ष जारी थी।

मुठ्ठी कभी खाली न थी। फिर भी तलाश जारी थी।
अंधे का बोध न थी।
ठोकरों को ठुकराना जारी थी
उड़ान मेरी सहज न थी। जूनून मेरी जारी थी।

मुठ्ठी कभी
उलझ से इंकार न शौर्य बजा रही थी।
पतन की पीड़ा कम थी। चुनोतियाँ ललकार रही थीं।

सपने कभी देखती थी।
मुठ्ठी कभी खाली न थी। फिर भी तलाश जारी थी।
जाग रही थी।

कवि परिचय

नाम : **श्रीमती ओमेश्वरी देवांगन "नूतन"**

पति : श्री संजय देवांगन

गुरू : वा. श्री राम संजीवन देवांगन

जन्म तिथि : 24.06.1970

मो. नं. : 7587466688

शैक्षणिक योग्यतायें : बी.एस.सी, एम.ए. (हिंदी, राजनीति एवं न्यूट्रिशन) पी–एच.डी. ब0वि0वि0 जगदलपुर (अध्ययनरत)

साहित्यिक परिचय/उपन्यास :

कोन बाढिस, (छत्तीसगढ़ी) , मया के डोरी (छत्तीसगढ़ी) बसेरा (हिंदी) एक कहानी यह भी (हिंदी) तलाश (हिंदी) मेरे सपने मेरा गांव (हिंदी) कलम से हत्या, (हिंदी) चाह (हिंदी) कू कू एफ एम मुंबई(प्रसिद्ध ऑडियो बुक प्रकाशन इंटरनेशनल लेवल)बसेरा से लेकर कलम से हत्या तक सभी पांच हिंदी उपन्यासों का ऑडियो प्रकाशन ,जिसमे मेरे सपने मेरा गांव, एक कहानी यह भी एवम कलम से हत्या को अधिक श्रोताओं के आधार पर गोल्डन लेखक की उपाधि।

अप्रकाशित काव्य संग्रहः

काश तुम न आते।

पता : ग्राम पोस्ट नैमेड, बीजापुर 494444

मंगतू राम
(किसानों की मौत पर)

छप्पर से टपकती बूंदे,
पानी नही।
आँसू है,
एक किसान की।
और दूध भी है,
वही बूंदे
मंगतू के बेटे के,
नसीब की।
दूध ना मिले,
तो पानी सही।
पानी बिकने लगे,
तो आँसू सही।।
मंगतू तो,
सब पी लेता है।
कुछ ना मिले,
तो जहर ही सही।।
छप्पर से टपकती बूंदे,
पानी नही।
आँसू है,
एक किसान की।

नारी शक्ति

लिखने बैठे थे, नारी शक्ति की बातें।
पर तेरी बेवफाई से, पीछा छुड़ा न पाए।।

भूल जाऊँ तुम्हें, कह तो दिया तुमने।
समझाऊं कैसे मन को, कि छल किया तुमने।।

पागल है दिल मेरा, जो तुम्हें भूला न पाए।
तेरी बेवफाई से, पीछा छुड़ा न पाए।।

मतलब की दुनिया में, तुम भी मतलबी निकले।
लूट ली मेरी दुनिया, जैसे ही मेरे पाँव फिसले।।

दिल छलनी करने की, क्यों कोई सजा बना न पाए।
तेरी बेवफाई से, पीछा छुड़ा न पाए।।

दिल जिद पर है, कि माफ कर दूं तुम्हें।
मन को मारकर, खुशियों की दुआ दूँ तुम्हें।।
फिर डरती हूँ, कि दूसरी सी नूतन

खुशियों की दुआ

दिल जिद पर है,
कि माफ कर दूं तुम्हे।
मन को मारकर,
खुशियों की दुआ दूं तुम्हे।।
पर डर है कि कोई और,
तुम्हारा शिकार हो न जाए।
तेरी बेवफाई से,
पीछा छुड़ा न पाए।

यूँ तो हमारे लिए,
बहुत बने है कानून।
कि सुरक्षित रहें,
बेटियाँ और खातून।।
फिर भावनाओं के खून की,
क्यों कोई सजा बना न पाए।
लिखने बैठे थे,
नारी शक्ति की बातें।
पर तेरी बेवफाई से,
पीछा छुड़ा न पाए।

आजकल

मैं खुश हूँ की,
आजकल मुझ पर,
और मेरी खुशहाली पर
बहुत बात होती है।

मैं खुश हूँ कि,
जलसों और जुलूसों में,
मेरे हक की,
बहुत बात होती है।

मैं खुश हूँ कि,
मेरी सुरक्षा पर,
जन से लेकर तंत्र तक,
बहुत बात होती है।

फिर भी.....
मैं तो आज भी,
असुरक्षित...
उपेक्षित.....
और अशिक्षित हूँ।
क्योंकि मुझपर,
सिर्फ बात होती हैं
सिर्फ बात होती हैं

माँ का प्यार

मैंने देखा है एक बार,
एक माँ को,
जो बैठी है,
एक मासूम चेहरा को,
देखते–देखते ।
वो बच्चा,
जो सो गया है,
रोते–रोते।
दूध ना मिलने पर,
माँ ने दी थी,
दो तमाचा तंग आकर।
और वो बालक भी,
सो गया था तमाचा खाकर।
झपकी ही लगी थी,
कि माँ उठ बैठ गई।
यह सोच काँप उठी,
कि भूख लिए सुबह आ गई।
अब वह देगी सिर्फ प्यार,
मैंने देखा है एक बार।

मिट्टी

मिट्टी में आकर, बैठ जाती हूँ,
मैं कभी–कभी।
क्योंकि मुझे अच्छी लगती है
मेरी ओकात कभी–कभी।।

जीतने के लिए दौड़ना है,
जीवन में आगे बढ़ना है।
सुनती हूँ, जब ये बात तो
मिट्टी में आकर बैठ जाती हूँ
मैं कभी–कभी।
क्योंकि मैं जानती हूँ,
कि हार गई तो,
पीछे छूट जाऊंगी।

डरातीं है, ये जीत
हार कभी–कभी।
फिर मुझे अच्छी लगती है,
मेरी औकात कभी कभी
मैं तो बस,
इतना जानती हूँ।
कि अच्छें हैं जो,
उनके लिए अच्छी रहूँगी।
को बुरे हैं
उनके लिए बुरी रहूँगी।।

क्योंकि.....
इस जग में,
लोग उतना ही पहचानेंगें,
जितना उन्हें जरूरत है।
और ऐसे ही,
दिन, साल गुजरते जायेंगे।

इसलिए.....
मैं मिट्टी में आकर,
बैठ जाती हूँ,
कभी कभी
क्योंकि यही अंतिम सत्य है।

कवि परिचय

नाम : **श्रीमती शशि किरण महंत (सोना)**

पिता : श्री कमलेश कुमार महन्त

माता : श्रीमती वीणा देवी महन्त

जन्म तिथि : 03.01.1992

पता : पोटाकेबीन आवासीय क्वार्टर नंबर 10 नैमेड, जिला– बीजापुर (छ.ग.)

शैक्षणिक योग्यतायें : स्नातकोत्तर अंग्रेजी एवं एम बी ए,बी.एड.

मो. नं. : 8319322248, 8319322248

ईमेल : shashimahant845@gmail.com

अप्रकाशित पुस्तके : वो पुछ रहे, क्या बात हुई, ''ख्वाहिश'' नारी, सपना, एक घर, (काव्य संकलन), दर्द भरी शायरी।

समंदर की रानी

मैं मत्स्य सी फड़फड़ाती बिन जल जैसे
कहीं दूर मेरा सागर
हूँ समंदर की रानी फिर भी
खाली पड़ा मेरा गागर।
अब हरियाली भी बंजर सी
क्यों लगते मुझको क्षण–क्षण
न बुझ पाये ये पहेली क्यों
समझाओ तुम्हीं मुझे आकर
हूँ समंदर की रानी .....
है हर श्रृंगार अधुरा सा
ना रौनक अब इस लाली में
है सन्नाटा पाजेब में भी
ना खनक बची इन बाली में
मैं बतलाउंगी मन की दशा
एक रोज तुम्हें सब जाकर
हूँ समंदर की रानी फिर भी
खाली पड़ा मेरा गागर।।

हाँ ये सच है कि उसे भुलाना नहीं चाहती

हाँ ये सच है कि उसे भूलना नहीं चाहती
वो याद है मुझे अब भी उसे जताना नहीं चाहती।।
गर खुश है मुझे भुलाकर अपनी जिंदगी में वो
तो मैं भी उसकी जिंदगी में वापस जाना नहीं चाहती।।
ना सो सकूं ना रो सकूं ना कह सकूं ना सह सकूं
पर उसपे सितम कर उसे रुलाना नहीं चाहती।।
बेशक उसकी बेरुखी से दिल टूटा है मगर
उसे भुलाकर मैं वापस मुस्कुराना नहीं चाहती।।
सच कहूं तो अब मैं और जीना नहीं चाहती।।।।

वह दर्द में है पर मैं रो न सकी

वह दर्द में है
पर मैं रो न सकी
पल–पल की तड़प उसकी
खोई हुई रातों की नींद
एक आस निराशा की चादर
में लिपटे हुए
जो उसके मन में बरकरार है
सब पढ़ तो सकी
पर कह ना सकी
वो दर्द में है
पर मैं रो ना सकी।
देख उसका समर्पण
खुदा भी रोने लगे
हम दूर बैठे अपने नैन
भिगोने लगे
दिल छलनी हो रहा
पर उसे कह ना सकी
वह दर्द में है
पर मैं रो ना सकी।
रिश्ता निभा रहा है वह कुछ ऐसे
प्यार के मायने सिखा रहा हो जैसे
वो जग रहा उधर
इधर में सो ना सकी

वो दर्द में है
पर मैं रो ना सकी।
कभी चाहा था उसे
अनजाने में मैंने
आज जाना इस कदर
उसे पूजने लगी हूँ
हर दुआ में शामिल हो रहा है मेरे
उसके जीने की खातिर अब
मरने लगी हूँ
उसे खबर इस बात की है
भले मैं कह ना सकी
वो बेशक दर्द में है
पर उसके सामने में
सचमुच रो ना सकी।

तेरे बिन रहना सकूँ

आ सामने मेरे कि
मैं फिर से जी लूँ
कुछ तू कह ले
कुछ मैं कह लूँ
आ सामने मेरे।।

आ सामने मेरे
मेरी चौखट पे तेरे निशान
अब मिट से गए हैं
ना ही आखों पे इंतजार
की घड़ी चल रही
बस सब थम सा गया है
मैं रूक सी गई हूँ
आ सामने मेरे कि
मैं मन भर लूँ
तुझमें खो जाऊँ
तुझे अपना कर लूँ
आ सामने मेरे।

हकीकत के घरोंदो से
बाहर निकल
ख्वाबों के मकान पर
मेहनत चल रही मेरी

तू आके पूछ बस ले पानी को
कि मेरी प्यास बुझ जाए
दिल ए जायदाद अब तेरे नाम कर दूँ
आ सामने मेरे
यूँ बिखर रही हूँ
सूखे पत्तों की तरह
बार–बार मिट रही हूँ जैसे
रेत पे किसी का नाम
बेबसी ही बस में है
कुछ ना कर सकूँ
जी भी नहीं पा रही और
मर भी ना सकूँ
मिलके भले जान ले मेरी
पर ये उलझन सह ना सकूँ
आ सामने मेरे कि
अब तेरे बिन रह ना सकूँ।

प्यार में खुद को बर्बाद होते देखा है

कभी नंगे पांव चली, कभी आधी रात गली में भटकती रही
कभी दर्द लिखा दिल पे, रात रात भर सिसकती रही
टूटे हुए इस मन को तार–तार होते देखा है
प्यार में खुद को बर्बाद होते देखा है।।

प्यार में लुट गई मैं, प्यार में मिट गई मैं
लेके दाग दामन में, खुद को उसका कर गई मैं
हसरतें अधूरी रही, अधूरी सी रह गई मैं
कफन ओढ़े खुद को जिंदा लाश होते देखा है
प्यार में खुद को बर्बाद होते देखा है।।

जिंदगी का हर पल उसके नाम कर दिया,
एक नाम खातिर खुद को बदनाम कर दिया
माथे पर रह गया बस दाग–ए–मोहब्बत
सिंदुर का रिश्ता उसके नाम कर दिया
उसकी बाहों में कैद होकर जैसे
खुद को आजाद होते देखा है
प्यार में खुद को बर्बाद होते देखा है।।

गुनहगार हूँ मैं उसकी

गुनहगार हूँ मैं उसकी
उससे खफा होकर जो उसे
तड़पने छोड़ दिया
जो मंजिल था मेरा
उससे रुख कैसे मोड़ लिया
यकीनन मैं गुनहगार हूँ उसकी।।

पर यह सच नहीं कि
मैं खुश हूँ उसके बगैर
ये भी सच नहीं कि
जी रही हूँ मैं तन्हा भी
बस सांस ले रही हूँ कह दूँ
तो क्या वह मान पाएगा
क्योंकि मैं गुनहगार हूँ उसकी।।

जीना मुहाल हो रहा है अब तो
धड़कनें भी दर्द का किस्सा कह रही
बेजुबान सी हालत हो चुकी है मेरी
क्या मेरी बेबसी जान पाएगा
आखिर मैं गुनहगार हूँ उसकी।।

कवि परिचय

नाम : **श्री अतुलेश तिवारी**

पिता : स्व. आर एल तिवारी

माता : पूज्यनीय श्रीमती विद्यावती तिवारी

जन्म तिथि : 01–05–1984

अनुभव : शिक्षाकर्मी 05 वर्ष, जनशिकायत निवारण अधिकारी (मनरेगा), कार्यक्रम अधिकारी (मनरेगा)

शैक्षणिक योग्यतायें : B.A. (Sanskrit Sahitya)
MBA (manav sansadhan)

मो. नं. : 9399451331

संप्रति : व्यवसायी

पता : विद्याभवन डिपो पारा बीजापुर
वार्ड क्रमांक 6 बीजापुर (छ.ग.)

आदमी की जात

मन से तो सुनते नहीं, कभी किसी की बात,

आदमी सारे हो गये, क्या मेंढक की जात ।।

बात –बात में कर रहें , औकातों की बात,

साहस के आभाव में,फिर खाते हैं मात ।।

सारे पालक है दुखी, ऐसी क्यों संतान

जीते–जी जो ले रहें मात पिता के प्रान ।।

अंग्रेजी शिक्षा का हमको ,ऐसा मिला वरदान ,

जीते –जी बच्चे अब लेते, मात पिता के प्रान ।।

निज प्रगति के आज है,मार्ग सभी अवरूद्व,

शिक्षा जो भी मिल रहीं सबही धर्म विरूद्व ।।

भाषा व्याकरण का नहीं हैं थोड़ा भी ज्ञान,

ऐसे भी कवि आप को, समझे बड़ा महान ।।

थोडे दुख में घुल गई, कच्ची मिटटी की देह,

अंगारों में है सिंझी अतुल, ये चट्टानी देह ।।

मातृभूमि

सबसे प्यारी होती है,
मातृभूमि की छाँव,
सब शहरों से बढ़कर,
अपना इक छोटा सा गाँव ।।

सुबह सुनहली धूप,
हमारे आँगन तक आ जाती हैं
बिना चाय उसकी गर्मी से ,
बड़ी ताजगी आती है ।।

इक पतली पगडंडी गाँव की
सबसे घर हो आती हैं
कहाँ शहर की सड़क बताओ,
द्वार किसी के जाती हैं।

नोक झोंक आपस में करते,
हर आफत से मिलकर लड़ते,
दाँव पेंच हर हशियारी सें
निश्छल मन दूर ही रहते।

लोकतंत्र

मर्यादित लोकतंत्र का, ऐसे हो व्यवहार
सिंहासन चिपकू बने, उनको दिए उतार ।।
घर में देवता पूजिए, सभी धर्म के आप
लोकतंत्र में जानिए, बस कर्मों का जाप ।।
लोकतंत्र को सच में नहीं मानते आप,
लूट लूट भरते रहें सदा तिजोरी आप ।।
कुछ करके देखा नहीं, सकल पढी किताब,
ऐसे लोग बनाएँगें क्या, भारत को सरताज ।।
नौकर करती शिक्षा को, कहिए बॉय–बॉय,
राष्ट्रगुरु बनने का हैं यही एक उपाय ।।
सारगर्भित ही रखे, अपने सब जज्बात
उतनी बातें कीजिए जितने की हो बात।।

पिता

बड़ा कठिन है कुछ भी लिखना पिता पर
निज इच्छा रखी जिनने हरदम चिता पर।।
साहस समर्पण और दृढता
प्रगट क्रोधी गुप्त ममता।
हैं पिता की कुछ निशानी
बहुत है जो न जाती जानी।।

निज सुखों की भेंट देता
दुख सुतो के मेंट देता।
हैं पिता तो चमत्कारी
बिना पानी नाव तारी।।

काल हैं सुत–विकार का वह
लेता सभी दुःख–दर्द को सह
हैं पिता तो कल्याणकारी
जगत से करे संघर्ष भारी।।

टूटी मुसीबत लाख उस पर,
वो पिता टूटा नहीं पर,
हैं पिता का हाथ सिर पर,
आ न सकती आँच तुझ पर।।

सत्य के आलोक में
कर निज पिता के दर्शन
तब होगा उस रुक्षता में
तुझको घोर आकर्षण।।

संघर्षो से कर दो–हाथ
राह सरल कर देता है।
पिता का हाथ, पुत्र के सिर पर
संकट सब हर लेता है।।

पानी

ये किसने कह दिया रंगहीन हैं पानी

विज्ञान में लिखा हैं वो झूठ हैं पानी

दूध की तरह सफेद

तुम्हें मिल जायेगा

झरनों से गिरते हुए पानी

मनों कह रहा हे मन में मैंल न रखना

जे चलते–चलते कहीं से जो गिरना

फिर नए उत्साह से उठ

दौड जाना सरपट

मेरी तरह !!

मिट्टी की तरह

नयी बरसात में

मटमैला भी दिखेगा,

मानो कह रहा हो,

सटमेटना मत

इस जग में कुछ भी

नहीं तो दिखोगें धूमिल

चमक खो जाओगें

मेरी तरह .....

रंगहीन भी दिखता हैं

गर्मी में .....

नदियों में जब बहता हैं,

मानो कहता हो,

बाँट दो ज्ञान

मत रखना अभिमान

प्यास बुझाओ

बनो शीतल,

फिर दिखोगे तुम भी निर्मल

मेरी तरह

फिर तुम्हें नीला भी दिखेगा

असीम से जब मिलेगा,

मानों कह रहा हो,

मिल जाओ भगवान में

हो जाओ नीले

असीम आकाश की तरह

या तुलसी के राम की तरह

फिर से बरस जाने को

मेरी तरह !!

अब कौन कहता हैं ?

रंगहीन हैं पानी

विज्ञान में लिखा हैं वो झूठ है

पुराने दोस्तों की याद

पुराने दोस्तों की तस्वीर

आज कहने लगी मुझसे

फेसबुक वाल से निकल कर

कभी तो रुबरु मिलो मुझसे !!

नहीं संवाद होते है

न घर ही आना जाना हैं

न जाने क्या हुए है हम

और कैसे ये जमाना हैं !!

नहीं संकोच होता था

किसी भी वक्त जाने में

उसके हर खिलौंने में

अपना अधिकार जमानें में !!

बहुत लड़ते झगड़ते थे

मगर हिल मिल कर रहते थे

कभी जो मिल न पाएँ तो

कलेजे मुँह को रहते थे !!

मिले वर्षों हुए उससे

गए घर एक जमाना है

बहुत आगे बढ़े लेकिन

बहुत पीछे जमाना हैं !!

कभी हैं क्या किसी को अब

साधन भी पूरा पूरा हैं

मगर बिन दोस्तों के सबका

जीवन अतुलेश अधुरा हैं

कवि परिचय

नाम : **प्रशांत यादव**
(सुधीर –प्रशांत)

पिता : स्व पी एल यादव, सेवानिवृत्त प्राचार्य

माता : श्रीमती विमला देवी यादव, गृहणी।

जन्म स्थान : दुर्ग, छत्तीसगढ़

शैक्षणिक योग्यतायें : बीकॉम ,एलएलबी, बीजेएमसी,पीजीडीआरडी

मो. नं. : 7587716299

कार्यक्षेत्र : पत्रकार के रूप में विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लेख,

पंचायत ग्रामीण विकास विभाग छत्तीसगढ़ शासन की पंचमन पत्रिका का सहसम्पदान।

हिंदी एवं छत्तीसगढ़ी भाषा में कविता, गीत, कहानी, लघु कथाएँ लेखन में सक्रिय।

ज्ञानमुद्रा पब्लिकेशकन भोपाल की 100 चयनित लेखकों की लघुकथाओं के संग्रह सागर की लहरें–1 में 2 लघुकथा प्रकाशित।

पता : सहायक प्रचार प्रसार अधिकारी जिला पंचायत बीजापुर (छ.ग.)

पुकार

अब आ जाओ मेरे वीरों तुम भी इस लड़ाई में,
ये अंग्रेजी शिक्षा छोड़ो क्या रखा है पढ़ाई में।
अंग्रेजी के दो अक्षर पढ़कर कहते है हम बढ़ रहे,
पहले देखो किस दलदल में कितने है हम गढ़ रहे।
गुरुकुल की वो पद्धति कहाँ गई जो थी किसी जमाने में,
गुरु –शिष्य नजर आते है आज एक साथ मयखाने में।
गुरु को दो दक्षिणा तो ट्यूशन फीस माँग रहे,
आज के ये पढ़े बच्चे हिंदी बोलते काँप रहे।
कितने कीड़े लगे हुए है देखो इस मलाई में,
ये अंग्रेजी शिक्षा छोड़ो क्या रखा है पढ़ाई में।
नेता घोटालों में व्यस्त हैं,
अधिकारी भी पद–मस्त है।
वर्दी पे गुंडागर्दी का जश्न है,
बेचारी जनता की हालत पस्त है।
तुमको जिंदा तल रहे देखो किस कढ़ाई में,
ये अंग्रेजी शिक्षा छोड़ो क्या रखा है पढ़ाई में।
गांधी के सपनों का भारत कागजो में दब गया,
वह पंचायती राज आज भ्रष्ट राज बन गया।
शहीदों की बलदानियाँ किताबों तक रह गई,
वह रक्त की धार आज पानी बनकर गई,
टूट चुकी है हिम्मत तुम्हारी क्या इसी पहनावे से,
वह बात कहाँ गई जो थी कभी धोती कुर्ते पैजामे में,
ये अंग्रेजी शिक्षा छोड़ो क्या रखा है पढ़ाई में।

21वीं सदी का आह्वान

जागो मेरे वीर सपूतों मैं तुम्हें जगाने आई हूँ,
मैं भारत माता आज फिर द्वार तुम्हारे आई हूँ।
भ्रष्ट नेताओं की भ्रष्ट नीति ने मजबूर मुझको कर डाला,
इसीलिए आतंकवाद ने जंजीरों में जकड़ डाला।
तुम्हें दूध का कर्ज चुकाने अवसर देने आई हूँ,
मैं भारत माता आज फिर द्वार तुम्हारे आई हूँ।

लूट रही है मुझे आज कई विदेशी कंपनियाँ,
तुम चूड़ी पहनकर घर में कब तक बेलोगी रोटियाँ।
तुम्हीं अबलाओं में मैं मां काली–चंडी जगाने आई हूँ,
जागो मेरी वीरांगनाओ मैं तुम्हें जगाने आई हूँ।
मैं भारत माता आज फिर द्वार तुम्हारे आई हूँ।
कहाँ गए वे वीर जो सीने में झेला करते थे गोलियाँ,
क्या खा गई उन्हें ये अंग्रेजी बोलियाँ।

कहाँ गए वे वीर जो खेला करते थे खून की होलियाँ,
चंद्रशेखर, भगत सिंह की कहाँ गई वह टोलियाँ।
उन्हीं टोलियों को मैं फिर आवाज लगाने आई हूँ,
मैं भारत माता आज फिर द्वार तुम्हारे आई हूँ।

क्या तुममे हिम्मत नहीं अब हथियार उठाने की,
क्या तुम्हारी चाह नहीं मेरी मांग सजाने की।
क्या तुम्हारा लहू बन गया है अब पानी,
उसी पानी को मैं फिर लाल बनाने आई हूँ।
मैं भारत माता आज फिर द्वार तुम्हारे आई हूँ।

तुम कविता....

तुम कविता की चार पंक्तियाँ
मैं हिंदी का अपठित गद्यांश
याद किया गया तुमको
लोग सदा रहे गुनगुनाते
मैं, ठहरा अल्प विराम सा बिंदु
अक्सर लोग रहे मुझे भुलाते
तुम अधरों पर सजने वाली
मैं किसी कोष्टक सा खाली
तुम चंद्रमा की बिन्दी
मैं अमावस की कालिन्दी
स्मरण किया गया तुम्हारा
बना काब्य इतिहास
शीर्षक ढूढ़ा गया मेरा
विस्मृत सा मैं
रहा, यही मेरा सारांश

(उपरोक्त पंक्तियां मुझे मेरे मित्र मनोज ने भेजी थी, इन पंक्तियों से प्रभावित हुए बिना न रह सका। मुझे लगा इसमें और भी विस्तार की संभावनाएँ शेष है, तदुपरांत सृजित पंक्तिया निम्न है)

तुम कविता की...
तुम गीतों की वैजंतीमाला
मैं कठोर शब्दों का हाला
तुम देवालय की मूरत सी

मैं पथ का पत्थर बेहाल
पूजन किया गया तुम्हारा
मैं तिरस्कृत हुआ हर बार
तुम कविता की....
तुम कवि की सुंदर कृति
मैं आलोचक का शब्द बाण
तुम सुर–ताल सुसज्जित
मैं अकम्प, अगम, उन्मुक्त वाद
प्रेममुग्ध जग है तुम्हारा
मैं अवहेलना का बना पात्र
तुम कविता की....
तुम कल्पना का स्वर्ग–द्वार
मैं यथार्थ का गिरी –विकराल
तुम मेनका की अद्वितीय प्रभा
मैं विश्वामित्र की अंतर–विद्या
मनुज रसपान करे तुम्हारा
मेरी नियति छल द्वार–द्वार
तुम कविता की...
तुम चंचल–सरिता की सरगम
मैं नीरनिधि (समुद्र) का ज्वार–नाद
तुम समुद्रमंथन की तृप्त–सुधा
मैं कटु–तीक्ष्ण हलाहल
देव –दानव को आस तुम्हारा
मेरा पान करे केवल नीलकंठ

तुम कविता की चार पंक्तियां,
मैं हिंदी का अपठित गद्यांश।
तुम गंगा का पावन जल
मैं शंकर का क्रोधानल
तुम पतितों की तारणहारी
में भस्म रमाये कापालपाणि
क्षुद्र भी तर जाते स्नान कर तुम्हारा
मेरे भाल त्रिनेत्र –भस्म करे जो जग सारा
तुम कविता की––––––
समानांतर तुम और मैं
विरंचि रचित सनातन जग में
जहां समाहित अस्तित्व धारा
संतुलित करे जो शिव–ज्वाला
नीलकंठ के कंठ हलाहल
शक्ति न विजित, न शिव हारा।

अमितेश तिवारी

बीरा राजबाबू ´ खर´

पुरूषोत्तम चन्द्रकार (गुरूजी)

गायत्री ठाकुर

डॉ.राजकुमार टंडन

राजीव रंजन मिश्रा ´´दुश्मन´´

अजय कुमार वर्मा

महेश कोपा

सुनील लम्बाड़ी

नागेश मोरला

राज गुरला

छेदी लाल टण्डन

दिलीप उसेंडी

कु बी रीना

ओमेश्वरी देवांगन "नूतन"

शशि किरण महन्त (सोना)

अतुलेश तिवारी

प्रशांत यादव

9 788195 308347

₹ 150

ADITI PUBLICATION

Near Ice Factory, Opp. Shakti Sound,
Service Gali, Kushalpur, Raipur (C.G.)
Mob. 91 94252 10308
E-mail:shodhsamagam1@gmail.com,
www.shodhsamagam.com